RNI No. UPHIN/2000/03766 ISSN No. 2581-3528 ₹ : 20

केशव संवाद

(सितम्बर-अक्टूबर, 2025) संयुक्तांक

RSS@100

पंच परिवर्तन

राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ का शताब्दी संकल्प

नहि प्रतिज्ञां कुर्वन्ति वितथां सत्यवादिनः। लक्षणं हि महत्त्वस्य प्रतिज्ञापरिपालनम्॥

सत्यवादी पुरुष झूठी प्रतिज्ञा नहीं करते हैं। प्रतिज्ञा का पालन ही बड़प्पन का लक्षण है।

विजयादशमी@दशहरा

आश्विन/कार्तिक

वि.सं. २०८२

शक सं. १९४७

अक्टूबर २०२५

शरद ऋतु

रविवार	सोमवार	मंगलवार	बुधवार	गुरुवार	शुक्रवार	शनिवार
			१ आश्विन शुक्ल पक्ष नवमी	२ विजयादशमी, दशहरा, गाँधी जयंती, श्री माधवाचार्य जयंती आश्विन शुक्ल पक्ष दशमी	३ पापांकुशा एकादशी आश्विन शुक्ल पक्ष एकादशी	४ शनि प्रदोष व्रत आश्विन शुक्ल पक्ष द्वादशी
५ रानी दुर्गावती जयंती आश्विन शुक्ल पक्ष त्रयोदशी	६ शरद पूर्णिमा आश्विन शुक्ल पक्ष चतुर्दशी	७ श्री वाल्मीकि जयंती, कार्तिक स्नान प्रारंभ आश्विन शुक्ल पक्ष पूर्णिमा	८ कार्तिक कृष्ण पक्ष प्रतिपदा/द्वि.	९ कार्तिक कृष्ण पक्ष तृतीया	१० करवा चौथ, श्री गणेश चतुर्थी व्रत कार्तिक कृष्ण पक्ष चतुर्थी	११ कार्तिक कृष्ण पक्ष पंचमी
१२ कार्तिक कृष्ण पक्ष षष्ठी	१३ अहोई अष्टमी, राधा कुण्ड स्नान कार्तिक कृष्ण पक्ष सप्तमी	१४ कार्तिक कृष्ण पक्ष अष्टमी	१५ कार्तिक कृष्ण पक्ष नवमी	१६ कार्तिक कृष्ण पक्ष दशमी	१७ गोवत्स द्वादशी, तुला संक्रान्ति, रमा एकादशी कार्तिक कृष्ण पक्ष एकादशी	१८ धनतेरस, श्री धन्वंतरि जयंती, प्रदोष व्रत कार्तिक कृष्ण पक्ष द्वादशी
१९ काली चौदस/ नरक चतुर्दशी, श्री हनुमान् जयंती कार्तिक कृष्ण पक्ष त्रयोदशी	२० लक्ष्मी पूजा, दीपावली कार्तिक कृष्ण पक्ष चतुर्दशी	२१ भौमवती अमावस्या कार्तिक कृष्ण पक्ष अमावस्या	२२ गोवर्धन पूजा, अन्नकूट कार्तिक शुक्ल पक्ष प्रतिपदा	२३ भैया दूज, यम द्वितीया, रानी कित्तूर चेनम्मा जयंती कार्तिक शुक्ल पक्ष द्वितीया	२४ कार्तिक शुक्ल पक्ष तृतीया	२५ श्री गणेश चतुर्थी व्रत कार्तिक शुक्ल पक्ष चतुर्थी
२६ लाभ पंचमी कार्तिक शुक्ल पक्ष पंचमी	२७ श्री सूर्यषष्ठी व्रत, छठ व्रत कार्तिक शुक्ल पक्ष षष्ठी	२८ छठ पूजा पारण कार्तिक शुक्ल पक्ष सप्तमी	२९ गोपाष्टमी कार्तिक शुक्ल पक्ष अष्टमी	३० अक्षय नवमी कार्तिक शुक्ल पक्ष नवमी	३१ राष्ट्रीय एकता दिवस, सरदार वल्लभ भाई पटेल जयंती कार्तिक शुक्ल पक्ष दशमी	

केशव संवाद

RNI No. UPHIN/2000/03766

ISSN No. 2581-3528

सितम्बर-अक्टूबर, 2025

वर्ष : 25 अंक : 09-10

सलाहकार समिति

उदयभान सिंह, रविन्द्र सिंह चौहान

रविन्द्र कुमार श्रीवास्तव

संपादक

कृपाशंकर

कार्यकारी संपादक

डॉ. नीलम कुमारी

प्रबंध निदेशक

मुकेश कुमार

प्रबंध संपादक

पंकज राणा

पृष्ठ संयोजन

वीरेंद्र पोखरियाल

संपादकीय कार्यालय

प्रेरणा शोध संस्थान न्यास

सी-56/20 सेक्टर-62, नोएडा -201309

फोन न. 0120 4565851

ईमेल : keshavsamvad@gmail.com

वेबसाइट : www.prernasamvad.in

स्वामी पंकज कुमार की ओर से मुद्रक/प्रकाशक रमन चावला द्वारा चन्द्र प्रभु ऑफसेट प्रिंटिंग वर्क प्रा.लि. नोएडा से मुद्रित तथा केशव भवन 105 आर्यनगर सूरजकुंड रोड मेरठ से प्रकाशित

इस पत्रिका में प्रकाशित लेखों में व्यक्त विचार लेखकों के अपने हैं। संपादक का उनसे सहमत होना आवश्यक नहीं है। सभी विवादों का निपटारा मेरठ की सीमा में आने वाली सक्षम अदालतों/फोरम में मान्य होगा। संपादक

विषय सूची

प.पू. सरसंघचालक जी का श्री विजयादशमी उत्सव पर दिए गए उद्बोधन का सारांश....05

संघ शताब्दी पर प्रधानमंत्री का संदेश राष्ट्र की समरस धारा का उत्सव....................10

संघ के शताब्दी वर्ष का विराट पथ संचलन..12

वर्तमान सामाजिक समस्याओं के समाधान में पंच परिवर्तन का महत्व.....................14

पंच परिवर्तन राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ का शताब्दी संकल्प................................16

पंच परिवर्तन के पुरोधा दंतोपंथ ठेंगड़ी...19

पंच परिवर्तन की कार्यशाला एवं प्रयोगशाला है हमारे शैक्षिक संस्थान.....................20

राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के 100 साल...22

समरसता का प्रतीक है विजयादशमी पर्व..24

वेदों में पंच परिवर्तन..26

आत्मनिर्भर भारत : अब दूसरों की नहीं अपनी शर्तों पर विकास..........................28

गुरुकुल से आधुनिक विद्यालय तक भारतीय शिक्षा की गौरवशाली परंपरा और ह्रास...30

मीडिया में श्री विजयादशमी उत्सव एवं पथ संचलन.......................................33

पाठकगण पत्रिका के बारे में अपने सुझाव एवं प्रतिक्रिया,'संपादक के नाम पत्र' शीर्षक से ई-मेल (keshavsamvad@gmail.com) के माध्यम से भेज सकते हैं। चुने हुए पत्रों को पत्रिका के अगले अंक में प्रकाशित किया जायेगा।

ISSN No. 2581-3528

संपादकीय..

भारत अपनी सनातन संस्कृति, सभ्यता, और परंपराओं के कारण अनादिकाल से विश्व का मार्गदर्शन करता आया है। आज, जब देश 21वीं शताब्दी में एक नई ऊंचाई की ओर अग्रसर है और संघ अपनी शताब्दी वर्ष में प्रवेश कर चुका हैं तब समाज में अनुशासन, देशभक्ति और समरसता की पुनर्स्थापना एक प्रमुख आवश्यकता बन गई है। इस दिशा में राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ ने पिछले 100 वर्षों में निःस्वार्थ सेवा और समर्पण से राष्ट्र निर्माण में अतुलनीय एवं अविस्मरणीय योगदान दिया है। समाज में अनुशासन और सकारात्मक परिवर्तन लाने के उद्देश्य से संघ ने 'पंच परिवर्तन' का आह्वान किया है, जो न केवल विकसित भारत की नींव रखने में सहायता करेगा, बल्कि समाज को एक नई दिशा देगा।

संघ का शताब्दी वर्ष अपने आप में ऐतिहासिक है यह वह समय है जब भारत विश्व पटल पर एक आत्मविश्वासी, आत्मनिर्भर एवं विकसित राष्ट्र के रूप में उभर रहा है। विज्ञान तकनीकी अर्थव्यवस्था और राष्ट्रीय राजनीति के क्षेत्र में भारत की भूमिका निरंतर बढ़ रही है ऐसे समय में संघ का शताब्दी वर्ष एक नए आत्मबोध का क्षण है जो स्व के भाव को पुनः स्थापित कर रहा है तथा जो इस भूमि की आत्मा में निहित है। संघ की 100 वर्षों की गौरवशाली यात्रा व्यक्ति निर्माण से राष्ट्र निर्माण की यात्रा है जो हमें व्यक्तिगत स्वार्थ से ऊपर उठकर राष्ट्र सर्वोपरि की प्रेरणा देती है। तथा 'राष्ट्राय स्वाहा इदं राष्ट्राय इदं न मम' को आत्मसात करने की प्रेरणा देती है।

शताब्दी वर्ष में व्यक्ति निर्माण का कार्य देश भौगोलिक दृष्टि से सर्वव्यापी हो तथा सामाजिक आचरण में सहज परिवर्तन लाने वाला पंच परिवर्तन कार्यक्रम स्वयंसेवकों के उदाहरण से समाज व्यापी बने यह संघ का शताब्दी संकल्प रहेगा। सामाजिक समरसता, कुटुंब प्रबोधन, पर्यावरण संरक्षण स्वबोध नागरिक कर्तव्य इन पांच विषयों में व्यक्ति व परिवार कृति रूप से स्वयं के आचरण में परिवर्तन लाने में सक्रिय हो। तथा समाज में उनके उदाहरणों का अनुकरण हो यही संघ का उद्देश्य है।

इस उद्देश्य के लिए संघ के स्वयंसेवकों के अतिरिक्त समाज के अन्य संगठन व व्यक्ति भी इन्हीं प्रकार के कार्यक्रम चला रहे हैं। संघ द्वारा चलाया जा रहा पंच परिवर्तन अभियान न केवल समरस एवं एकात्म भारत के निर्माण के लिए आवश्यक है बल्कि विश्व कल्याण का मार्ग प्रशस्त करने के लिए भी आवश्यक है।

वर्ष 2047 तक विकसित भारत को पूर्णतः समरस एवं एकात्म भारत के निर्माण में संघ का असीम योगदान रहेगा।

प्रोफेसर (डॉ.) नीलम कुमारी

ISSN No. 2581-3528

राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ

प. पू. सरसंघचालक श्री मोहन जी भागवत द्वारा श्री विजयादशमी उत्सव, नागपुर, के अवसर पर दिए उद्बोधन का सारांश (आश्विन शु. 10 युगाब्द 5127 – गुरुवार दिनांक 2 अक्तूबर 2025)

राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के कार्य के शतवर्ष पूर्ण करने वाली इस विजयादशमी के निमित्त हम यहाँ एकत्रित है। संयोग है कि यह वर्ष श्री गुरु तेग बहादुर जी महाराज के पावन देहोत्सर्ग का तीन सौ पचास वाँ वर्ष है। हिन्द की चादर बनकर उनके उस बलिदान ने विदेशी विधर्मी अत्याचार से हिन्दू समाज की रक्षा की। अंग्रेजी दिनांक के अनुसार आज स्व. महात्मा गांधी जी का जन्मदिवस है। अपनी स्वतंत्रता के शिल्पकारों में वे अग्रणी हैं ही, भारत के 'स्व' के आधार पर स्वातंत्र्योत्तर भारत की संकल्पना करने वाले दार्शनिकों में भी उनका स्थान विशिष्ट है। सादगी, विनम्रता, प्रामाणिकता तथा दृढ़ता के धनी व देशहित में अपने प्राण तक न्यौछावर करने वाले हमारे भूतपूर्व प्रधानमंत्री स्व.लाल बहादुर शास्त्री जी का जन्मदिवस भी आज ही है।

भक्ति, समर्पण व देशसेवा के ये उत्तुंग आदर्श हम सभी के लिए अनुकरणीय हैं। मनुष्य वास्तविक दृष्टि से मनुष्य कैसे बने और जीवन को जिये यह शिक्षा हमें इन महापुरुषों से मिलती है।

आज की देश व दुनिया की परिस्थिति भी हम भारतवासियों से इसी प्रकार से व्यक्तिगत व राष्ट्रीय चारित्र्य से सुसंपन्न जीवन की माँग कर रही है। गत वर्ष भर के कालावधि में हम सब ने एक स्वतंत्र राष्ट्र के रूप में जो राह तय की है उसके पुनरावलोकन से यह बात ध्यान में आती है।

वर्तमान परिदृश्य : आशा और चुनौतियाँ

यह बीती कालावधि एक तरफ विश्वास तथा आशा को अधिक बलवान बनाने वाली है तथा दूसरी ओर हमारे सम्मुख उपस्थित पुरानी व नयी चुनौतियों को अधिक स्पष्ट रूप में उजागर करते हुए हमारे लिए विहित कर्तव्य पथ को भी निर्देशित करने वाली है ।

गत वर्ष प्रयागराज में संपन्न महाकुंभ ने श्रद्धालुओं की सर्व भारतीय संख्या के साथ ही उत्तम व्यवस्थापन के भी सारे कीर्तिमान तोड़कर एक जागतिक विक्रम प्रस्थापित किया। संपूर्ण भारत में श्रद्धा व एकता की प्रचण्ड लहर जगायी।

दिनांक 22 अप्रैल को पहलगाम में सीमापार से आये आतंकवादियों के हमले में 26 भारतीय यात्री नागरिकों की उनका हिन्दू धर्म पूछ कर हत्या कर दी गई। संपूर्ण भारतवर्ष में नागरिकों में दुःख और क्रोध की ज्वाला भड़की। भारत सरकार ने योजना बनाकर मई मास में इसका पुरजोर उत्तर दिया। इस सब कालावधि में देश के नेतृत्व की दृढ़ता तथा हमारी सेना के पराक्रम तथा युद्ध कौशल के साथ-साथ ही समाज की दृढ़ता व एकता का सुखद दृश्य हमने देखा। परन्तु अपनी तरफ से सबसे मित्रता की नीति व भाव रखते हुए भी हमें अपने सुरक्षा के विषय में अधिकाधिक सजग रहना व समर्थ बनते रहना पड़ेगा यह बात भी हमें समझ में आ गई।

विश्व में बाकी सब देशों के इस प्रसंग के संबंध में जो नीतिगत क्रियाकलाप बने उससे विश्व में हमारे मित्र कौन-कौन औंर कहाँ तक हैं इसकी परीक्षा भी हो गई।

देश के अन्दर उग्रवादी नक्सली आन्दोलन पर शासन तथा प्रशासन की दृढ़ कारवाई के कारण तथा लोगों के सामने उनके विचार का खोखलापन व क्रूरता अनुभव से उजागर होने के कारण, बड़ी मात्रा में नियंत्रण आया है। उन क्षेत्रों में नक्षलियों के पनपने के

मूल में वहाँ चल रहा शोषण व अन्याय, विकास का अभाव तथा शासन-प्रशासन में इन सब बातों के प्रति संवेदना का अभाव ये कारण थे। अब यह बाधा दूर हुई है तो उन क्षेत्रों में न्याय, विकास, सद्भावना, संवेदना तथा सामरस्य स्थापन करने के लिए कोई व्यापक योजना शासन-प्रशासन के द्वारा बने इसकी आवश्यकता रहेगी।

आर्थिक क्षेत्र में भी प्रचलित परिमाणों के आधार पर हमारी अर्थ स्थिति प्रगति कर रही है, ऐसा कहा जा सकता है। अपने देश को विश्व में सिरमौर देश बनाने का सर्व सामान्य जनों में बना उत्साह हमारे उद्योग जगत में और विशेष कर नई पीढ़ी में दिखता है। परंतु इस प्रचलित अर्थ प्रणाली के प्रयोग से अमीरी व गरीबी का अंतर बढ़ना, आर्थिक सामर्थ्य का केंद्रीकृत होना, शोषकों के लिए अधिक सुरक्षित शोषण का नया तंत्र दृढ़मूल होना, पर्यावरण की हानि, मनुष्यों के आपसी व्यवहार में संबंधों की जगह व्यापारिक दृष्टि व अमानवीयता बढ़ना, ऐसे दोष भी विश्व में सर्वत्र उजागर हुए हैं। इन दोषों की बाधा हमें न हों तथा अभी अमेरिका ने अपने स्वयं के हित को आधार बनाकर जो आयात शुल्क नीति चलायी उसके चलते, हमको भी कुछ बातों का पुनर्विचार करना पड़ने वाला है। विश्व परस्पर निर्भरता पर जीता है। परंतु स्वयं आत्मनिर्भर होकर, विश्व जीवन की एकता को ध्यान में रखकर हम इस परस्पर निर्भरता को अपनी मजबूरी न बनने देते हुए अपने स्वेच्छा से जिएं, ऐसा हमको बनना पड़ेगा। स्वदेशी तथा स्वावलंबन को कोई पर्याय नहीं है।

जड़वादी पृथगात्म दृष्टि पर आधारित विकास की संकल्पना को लेकर जो विकास की जड़वादी व उपभोगवादी नीति विश्व भर में प्रचलित है उसके दुष्परिणाम सब ओर उत्तरोत्तर बढ़ती मात्रा में उजागर हो रहे हैं। भारत में भी वर्तमान में उसी नीति के चलते वर्षा का अनियमित व अप्रत्याशित वर्षामान, भूस्खलन, हिमनदियों का सूखना आदि हो रहे हैं। दक्षिण पश्चिम एशिया का सारा जलस्रोत हिमालय से आता है। उस हिमालय में इन दुर्घटनाओं का होना भारतवर्ष और दक्षिण एशिया के अन्य देशों के लिए खतरे की घंटी माननी चाहिए ।

गत वर्षों में हमारे पड़ोसी देशों में बहुत उथल-पुथल मची है। श्रीलंका में, बांग्लादेश में और हाल ही में नेपाल में जिस प्रकार जन-आक्रोश का हिंसक उद्रेक होकर सत्ता का परिवर्तन हुआ वह हमारे लिए चिंताजनक है । अपने देश में तथा दुनिया में भी भारतवर्ष में इस प्रकार के उपद्रवों को चाहने वाली शक्तियाँ सक्रीय हैं । शासन प्रशासन का समाज से टूटा हुआ सम्बन्ध, चुस्त व लोकाभिमुख प्रशासकीय क्रिया-कलापों का अभाव यह असंतोष के स्वाभाविक व तात्कालिक कारण होते हैं। परन्तु हिंसक उद्रेक में वांच्छित परिवर्तन लाने की शक्ति नहीं होती। प्रजातांत्रिक मार्गों से ही समाज ऐसे आमूलाग्र परिवर्तन ला सकता है। अन्यथा ऐसे हिंसक प्रसंगों में विश्व की वर्चस्ववादी ताकतें अपना खेल खेलने के अवसर ढूँढे, यह संभावना बनती है। यह हमारे पड़ोसी देश सांस्कृतिक दृष्टि से तथा जनता के नित्य संबंधों की दृष्टि से भी भारत से जुड़े हैं । एक तरह से हमारा ही परिवार है। वहाँ पर शांति रहे, स्थिरता रहे, उन्नति हो, सुख और सुविधा की व्यवस्था हो, यह हमारे लिए हमारे हितरक्षण से भी अधिक हमारी स्वाभाविक आत्मीयताजन्य आवश्यकता है ।

विश्व में सर्वत्र ज्ञान-विज्ञान की प्रगति, सुख-सुविधा तकनीकी का मनुष्य जीवन में कई प्रकार की व्यवस्थाओं को आरामदायक बनाने वाला स्वरूप, संचार माध्यमों व आंतरराष्ट्रीय व्यापार के कारण दुनिया के राष्ट्रों में बढ़ी हुई निकटता जैसे परिस्थिति का सुखदायक रूप दिखता है । परन्तु विज्ञान एवं तकनीकी की प्रगति की गति व मनुष्यों की इन से तालमेल बनाने की गति इस में बड़ा अंतर है। इसलिए सामान्य मनुष्यों के जीवन में बहुत सारी समस्याएँ उत्पन्न होती दिखाई दे रही हैं। वैसे ही सर्वत्र चल रहे युद्धों सहित अन्य छोटे बड़े कलह, पर्यावरण के क्षरण के कारण प्रकृति के उग्र प्रकोप, सभी समाजों में तथा परिवारों में आई हुई टूटन, नागरिक जीवन में बढ़ता हुआ अनाचार व अत्याचार ऐसी समस्याएँ भी साथ में चलती हुई दिखाई देती हैं। इन सबके उपाय के प्रयास हुए हैं परंतु वे इन समस्याओं की बढ़त को रोकने में अथवा उनका पूर्ण निदान देने में असफल रहे हैं। मानव मात्र में इसके चलते आई हुई अस्वस्थता, कलह और हिंसा को और बढ़ाते हुए, सभी प्रकार के मांगल्य, संस्कृति, श्रद्धा, परंपरा आदि का संपूर्ण विनाश ही, आगे अपने आप इन समस्याओं को ठीक करेगा, ऐसा विकृत और विपरीत विचार लेकर चलने वाली शक्तियों का संकट भी, सभी देशों में अनुभव में आ रहा है। भारतवर्ष में भी कम-अधिक प्रमाण में इन सब परिस्थितियों को हम अनुभव कर रहे हैं। अब विश्व इन समस्याओं के समाधान के लिए भारत की दृष्टि से निकले चिंतन में से उपाय की अपेक्षा कर रहा है ।

हम सब की आशा और आश्वस्ति बढाने वाली बात यह है कि अपने देश में सर्वत्र तथा विशेषकर नई पीढ़ी में देशभक्ति की भावना अपने संस्कृति के प्रति आस्था व विश्वास का प्रमाण निरंतर बढ़ रहा है । संघ के स्वयंसेवकों सहित समाज में चल रही विविध धार्मिक, सामाजिक संस्थाएं तथा व्यक्ति समाज के अभावग्रस्त वर्गों की निःस्वार्थ सेवा करने के लिए अधिकाधिक आगे आ रहे है, और इन सब बातों के कारण समाज का स्वयं सक्षम होना और स्वयं की पहल से अपने सामने की समस्याओं का समाधान करना व अभावों की पूर्ति करना बढ़ा है। संघ के स्वयंसेवकों का यह अनुभव है कि संघ और समाज के कार्यों में प्रत्यक्ष सहभागी होने की इच्छा समाज में बढ़ रही है। समाज के बुद्धिजीवियों में भी विश्व में प्रचलित विकास तथा लोकप्रबंधन के प्रतिमान के अतिरिक्त अपने देश के जीवन दृष्टि, प्रकृति तथा आवश्यकता के आधार पर अपना स्वतन्त्र और अलग प्रकार का कोई प्रतिमान कैसा हो सकता है इसकी खोज का चिंतन बढ़ा है।

भारतीय चिन्तन दृष्टि : भारत का तथा परिणाम गत तीन-चार वर्षो में अधिक तीव्र विश्व का विचार भारतीय दृष्टि के आधार पर करने वाले हमारे सभी आधुनिक मनीषी, स्वामी

विवेकानंद से लेकर तो महात्मा गांधीजी, दीनदयालजी उपाध्याय, राम मनोहर लोहिया जी, ऐसे हमारे समाज का नेतृत्व करने वाले सभी महापुरुषों ने, उपरोक्त सभी समस्याओं का परामर्श करते हुए, एक समान दिशा का दिग्दर्शन किया है । आधुनिक विश्व के पास जो जीवन दृष्टि है वह पूर्णतः गलत नहीं, अधूरी है। इसलिए उसके चलते मानव का भौतिक विकास तो कुछ देशों और वर्गों के लिए आगे बढ़ा हुआ दिखता है। सबका नहीं । सबको छोडिये, अकेले भारत को अमेरिका जैसा तथाकथित समृद्ध और प्रगत भौतिक जीवन जीना है तो और पांच पृथ्वियों की आवश्यकता होगी ऐसा कुछ अभ्यासक कहते हैं। आज की इस प्रणाली से भौतिक विकास के साथ-साथ मानव का मानसिक व नैतिक विकास नहीं हुआ। इसलिए प्रगति के साथ-साथ ही मानव व सृष्टि के सामने नयी-नयी समस्याएँ प्राण संकट बन खड़ी हो रही हैं। इसका कारण - वही दृष्टि का अधूरापन !

हमारी सनातन, आध्यात्मिक, समग्र व एकात्म दृष्टि में मनुष्य के भौतिक विकास के साथ-साथ मन, बुद्धि तथा आध्यात्मिकता का विकास, व्यक्ति के साथ-साथ मानव समूह व सृष्टि का विकास, मनुष्य की आवश्यकताओं-इच्छाओं के अनुरूप आर्थिक स्थिति के साथ-साथ ही, उसके समूह और सृष्टि को लेकर कर्तव्य बुद्धि का तथा सब में अपनेपन के साक्षात्कार को अनुभव करने के स्वभाव का विकास करने की शक्ति है। क्योंकि हमारे पास सबको जोड़ने वाले तत्त्व का साक्षात्कार है। उसके आधार पर सहस्त्रों वर्षों तक इस विश्व में हमने एक सुंदर, समृद्ध और शांतिपूर्ण, परस्पर संबंधों को पहचानने वाला, मनुष्य और सृष्टि का सहयोगी जीवन प्रस्थापित किया था। उस हमारी समग्र तथा एकात्म दृष्टि के आधार पर, आज के विश्व की आवश्यकताओं की पूर्ति करते हुए, आज विश्व जिन समस्याओं का सामना कर रहा है, उनका शाश्वत निदान देने वाली एक नई रचना की विश्व को आवश्यकता है। अपने उदाहरण से उस रचना का अनुकरणीय प्रतिमान विश्व को देना यह कार्य नियति हम भारतवासियों से चाहती है।

संघ का चिन्तन : राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ अपने कार्य के शतवर्ष पूर्ण कर चुका है । संघ में विचार व संस्कारों को प्राप्त कर समाज जीवन के विभिन्न आयामों में, विविध संगठनों में, संस्थाओं में, तथा स्थानीय स्तर से राष्ट्रीय स्तर तक स्वयंसेवक सक्रिय हैं । समाज जीवन में सक्रिय अनेक सज्जनों के साथ भी स्वयंसेवकों का सहयोग व संवाद चलते रहता है। उन सबके संकलित अनुभव के आधार पर संघ के कुछ निरीक्षण व निष्कर्ष बने हैं ।

1) भारत वर्ष के उत्थान की प्रक्रिया गति पकड़ रही है। परन्तु अभी भी हम उसी नीति व व्यवस्था के दायरों में ही सोच रहे हैं जिस का अधूरापन उस नीति के जो परिणाम आज मिल रहे हैं उन से उजागर हो चुका है। यह बात सही है कि उन तरीकों पर विश्व के साथ हम भी इतना आगे पहले ही बढ़ गये हैं कि एकदम परिवर्तन करना संभव नहीं होगा। एक लम्बे वृत्त में धीरे-धीरे ही मुड़ना पड़ेगा। परन्तु हमारे सहित विश्व के सामने खड़ी समस्याओं तथा भविष्य के खतरों से बचने का दूसरा उपाय नहीं है। हमें अपनी समग्र व एकात्म दृष्टि के आधार पर अपना विकास पथ बनाकर, विश्व के सामने एक यशस्वी उदाहरण रखना पड़ेगा । अर्थ व काम के पीछे अंधी होकर भाग रही दुनिया को पूजा व रीति रिवाजों के परे, सबको जोड़ने वाले, सबको साथ में लेकर चलने वाले, सबकी एक साथ उन्नति करने वाले धर्म का मार्ग दिखाना ही होगा ।

2) संपूर्ण देश का ऐसा आदर्श चित्र विश्व के सामने खड़ा करने का काम केवल देश की व्यवस्थाओं का ही नहीं है। क्योंकि व्यवस्थाओं का अपने में परिवर्तन का सामर्थ्य व इच्छा, दोनों मर्यादित होती है। इन सब की प्रेरणा व इन सब का नियंत्रण समाज की प्रबल इच्छा से ही होता है। इसलिए व्यवस्था परिवर्तन के लिए समाज का प्रबोधन तथा उसके आचरण का परिवर्तन यह व्यवस्था परिवर्तन की पूर्व शर्तें हैं। समाज के आचरण में परिवर्तन भाषणों से या ग्रंथों से नहीं आता । समाज का व्यापक प्रबोधन करना पड़ता है तथा प्रबोधन करने वालों को स्वयं परिवर्तन का उदाहरण बनना पड़ता है। स्थान-स्थान पर ऐसे उदाहरण स्वरूप व्यक्ति, जो समाज के लिए उसके अपने हैं, उनके जीवन में पारदर्शिता है, निःस्वार्थता है और जो संपूर्ण समाज को अपना मानकर समाज के साथ अपना नित्य व्यवहार करते हैं, समाज को उपलब्ध होने चाहिए। समाज में सबके साथ रहकर अपने उदाहरण से समाज को प्रेरणा देने वाला ऐसा स्थानीय सामाजिक नेतृत्व चाहिए। इसलिए व्यक्ति निर्माण से समाज परिवर्तन और समाज परिवर्तन से व्यवस्था परिवर्तन यह देश में और विश्व में परिवर्तन लाने का सही पथ है यह स्वयंसेवकों का अनुभव है ।

3) ऐसे व्यक्तियों के निर्माण की व्यवस्था भिन्न-भिन्न समाजों में सक्रिय रहती है। हमारे समाज में आक्रमण की लंबी अवधि में यह व्यवस्थाएँ ध्वस्त हो गईं। इसलिए इसकी युगानुकूल व्यवस्था घर में, शिक्षा पद्धति में व समाज के क्रियाकलापों में फिर से स्थापित करनी पड़ेगी। यह कार्य करने वाले व्यक्ति तैयार करने पड़ेंगे। मन बुद्धि से इस विचार को मानने के बाद भी उनको आचरण में लाने के लिए मन, वचन, कर्म, की आदत बदलनी पड़ती है, उसके लिए व्यवस्था चाहिए। संघ की शाखा वह व्यवस्था है। सौ वर्षों से सब प्रकार की परिस्थितियों में आग्रहपूर्वक इस व्यवस्था को संघ के स्वयंसेवकों के द्वारा सतत चलाया गया है और आगे भी ऐसे ही चलाना है। इसलिए स्वयंसेवकों को नित्य शाखा के कार्यक्रमों को मन लगाकर करते हुए अपनी आदतों में परिवर्तन करने की साधना करनी पड़ती है। व्यक्तिगत सद्गुणों की तथा सामूहिकता की साधना करना तथा समाज के क्रियाकलापों में सहभागी, सहयोगी होते हुए समाज में सद्गुणों का व सामूहिकता का वातावरण निर्माण करने के लिए ही संघ की शाखा है ।

4) किसी भी देश के उत्थान में सबसे महत्वपूर्ण कारक उस देश के समाज की एकता है। हमारा देश विविधताओं का देश है। अनेक भाषाएँ अनेक पंथ, भौगोलिक विविधता

ISSN No. 2581-3528

के कारण रहन-सहन, खान-पान के अनेक प्रकार, जाति-उपजाति आदि विविधताएँ पहले से ही हैं। पिछले हजार वर्षों में भारतवर्ष की सीमा के बाहर के देशों से भी यहाँ पर कुछ विदेशी संप्रदाय आ गए। अब विदेशी तो चले गए लेकिन उन संप्रदायों को स्वीकार कर आज भी अनेक कारणों से उन्हीं पर चलने वाले हमारे ही बंधु भारत में विद्यमान हैं। भारत की परंपरा में इन सब का स्वागत और स्वीकार्य है। इनको हम अलगता की दृष्टि से नहीं देखते। हमारी विविधताओं को हम अपनी अपनी विशिष्टताएँ मानते हैं और अपनी-अपनी विशिष्टता पर गौरव करने का स्वभाव भी समझते हैं। परंतु यह विशिष्टताएँ भेद का कारण नहीं बननी चाहिए। अपनी सब विशिष्टताओं के बावजूद हम सब एक बडे समाज के अंग हैं। समाज, देश, संस्कृति तथा राष्ट्र के नाते हम एक हैं । यह हमारी बड़ी पहचान हमारे लिए सर्वोपरि है यह हमको सदैव ध्यान में रखना चाहिए। उसके चलते समाज में सबका आपस का व्यवहार सद्भावनापूर्ण व संयमपूर्ण रहना चाहिए। सब की अपनी-अपनी श्रद्धाएँ, महापुरुष तथा पूजा के स्थान होते हैं। मन, वचन, कर्म से आपस में इनकी अवमानना न हो इसका ध्यान रखना चाहिए। इसलिए प्रबोधन करने की आवश्यकता है। नियम पालन, व्यवस्था पालन करना व सद्भावपूर्वक व्यवहार करना यह इसीलिए अपना स्वभाव बनना चाहिये। छोटी-बड़ी बातों पर या केवल मन में संदेह है इसलिए, कानून हाथ में लेकर रास्तोंपर निकल आना, गुंडागर्दी, हिंसा करना यह प्रवृत्ति ठीक नहीं। मन में प्रतिक्रिया रखकर अथवा किसी समुदाय विशेष को उकसाने के लिए अपना शक्ति प्रदर्शन करना ऐसी घटनाओं को योजनापूर्वक कराया जाता है। उनके चंगुल में फ़सने का परिणाम, तात्कालिक और दीर्घकालिक, दोनों दृष्टी से ठीक नहीं है। इन प्रवृत्तियों की रोकथाम आवश्यक है। शासन-प्रशासन अपना काम बिना पक्षपात के तथा बिना किसी दबाव में आये, नियम के अनुसार करें। परन्तु समाज की सज्जन शक्ति व तरुण पीढ़ी को भी सजग व संगठित होना पडेगा, आवश्यकतानुसार हस्तक्षेप भी करना पड़ेगा।

5) हमारी इस एकता के आधार को डह्क्टर अंबेडकर साहब ने Inherent cultural unity (अन्तर्निहित सांस्कृतिक एकता) कहा है। भारतीय संस्कृति प्राचीन समय से चलती आई हुई भारत की विशेषता है। वह सर्व समावेशक है। सभी विविधताओं का सम्मान और स्वीकार करने की सीख देती है क्योंकि वह भारत के आध्यात्मिक सत्य तथा करुणा, शुचिता व तप के सदाचार पर यानी धर्म पर आधारित है। इस देश के पुत्र रूप हिंदू समाज ने इसे परंपरा से अपने आचरण में जतन किया है, इसलिए उसे हिंदू संस्कृति भी कहते हैं। प्राचीन भारत में ऋषियों ने अपने तपोबल से इस को निःसृत किया। भारत के समृद्ध तथा सुरक्षित परिवेश के कारण उनसे यह कार्य हो पाया । हमारे पूर्वजों के परिश्रम, त्याग व बलिदानों के कारण यह संस्कृति फली-फूली व अक्षुण्ण रहकर आज हम तक पहुँची है। उस हमारी संस्कृति का आचरण, उसका आदर्श बनें हमारे पूर्वजों का मन में गौरव व कृति में विवेकपूर्ण अनुसरण तथा यह सब जिसके कारण संभव हुआ उस हमारे पवित्र मातृभूमि की भक्ति यह मिलकर हमारी राष्ट्रीयता हैं। विविधताओं के संपूर्ण स्वीकार व सम्मान के साथ हम सब को एक माल में मिलाने वाली यह हिन्दू राष्ट्रीयता ही हमें सदैव एक रखती आयी है। हमारी 'छंजपवद ैजंजम' जैसी कल्पना नहीं है। राज्य आते हैं और जाते हैं, राष्ट्र निरन्तर विद्यमान है। हम सब की एकता का यह आधार हमें कभी भी भूलना नहीं चाहिए।

6) संपूर्ण हिंदू समाज का बल संपन्न, शील संपन्न संगठित स्वरूप इस देश के एकता, एकात्मता, विकास व सुरक्षा की गारंटी है। हिंदू समाज इस देश के लिए उत्तरदायी समाज है, हिंदू समाज सर्व-समावेशी है। ऊपर के अनेकविध नाम और रूपों को देखकर, अपने को अलग मानकर, मनुष्यों में बटवारा व अलगाव खड़ा करने वाली 'हम और वे' इस मानसिकता से मुक्त है और मुक्त रहेगा। 'वसुधैव कुटुंबकम्' की उदार विचारधारा का पुरस्कर्ता व संरक्षक हिंदू समाज है । इसलिए भारतवर्ष को वैभव संपन्न व संपूर्ण विश्व में अपना अपेक्षित व उचित योगदान देने वाला देश बनाना, यह हिंदू समाज का कर्तव्य बनता है। उसकी संगठित कार्य शक्ति के द्वारा, विश्व को नयी राह दे सकने वाले धर्म का संरक्षण करते हुए, भारत को वैभव संपन्न बनाना, यह संकल्प लेकर संघ सम्पूर्ण हिंदू समाज के संगठन का कार्य कर रहा है। संगठित समाज अपने सब कर्तव्य स्वयं के बलबूते पूरे कर लेता है। उसके लिए अलग से अन्य किसी को कुछ करने की आवश्यकता नहीं रहती।

7) उपरोक्त समाज का चित्र प्रत्यक्ष साकार होना है तो व्यक्तिओं में, समूहों में व्यक्तिगत तथा राष्ट्रीय चारित्र्य, दोनों के सुदृढ होने की आवश्यकता रहेगी। अपने राष्ट्र स्वरूप की स्पष्ट कल्पना व गौरव संघ की शाखा में प्राप्त होता है। नित्य शाखा में चलने वाले कार्यक्रमों से स्वयंसेवकों में व्यक्तित्व, कर्तृत्व, नेतृत्व, भक्ति व समझदारी का विकास होता है।

इसलिए शताब्दि वर्ष में व्यक्ति निर्माण का कार्य देश में भौगोलिक दृष्टि से सर्वव्यापी हो तथा सामाजिक आचरण में सहज परिवर्तन लाने वाला पंच परिवर्तन कार्यक्रम स्वयंसेवकों के उदाहरण से समाजव्यापी बने यह संघ का प्रयास रहेगा। सामाजिक समरसता, कुटुंब प्रबोधन, पर्यावरण संरक्षण, स्व बोध तथा स्वदेशी व नियम, कानून, नागरिक अनुशासन व संविधान का पालन इन पांच विषयों में व्यक्ति व परिवार, कृतिरूप से स्वयं के आचरण में परिवर्तन लाने में सक्रिय हो तथा समाज में उनके उदाहरणों का अनुकरण हो ऐसा यह कार्यक्रम है। इसमें अंतर्भूत कृतियाँ आचरण के लिए सरल और सहज है। गत दो-तीन वर्षों में समय-समय पर संघ के कार्यक्रमों में इसका विस्तृत विवेचन हुआ है। संघ के स्वयंसेवकों के अतिरिक्त समाज में अनेक अन्य संगठन व व्यक्ति भी इन्ही प्रकार के कार्यक्रम चला रहे है।

उन सब के साथ संघ के स्वयंसेवकों का सहयोग व समन्वय साधा जा रहा है।

विश्व के इतिहास में समय-समय पर भारत का महत्वपूर्ण अवदान, विश्व का खोया हुआ संतुलन वापस लाने वाला, विश्व के जीवन में संयम और मर्यादा का भान उत्पन्न करने वाला विश्व धर्म देना, यही रहा है। हमारे प्राचीन पूर्वजों ने भारत भूमि में निवास करने वाले विविधतापूर्ण समाज को संगठित कर एक राष्ट्र के रूप में इसी कर्तव्य के बारंबार आपूर्ति करने के साधन के नाते खड़ा किया था। हमारे स्वातंत्र्य संग्राम के तथा राष्ट्रीय नवोत्थान के पुरोधाओं के सामने स्वतन्त्र भारत की समृद्धि व क्षमताओं के विकास के मंगल परिणाम का यही चित्र था।

हमारे बंगाल प्रांत के पूर्ववर्ती संघचालक स्व. केशवचन्द्र चक्रवर्ती महाशय ने बहुत सुन्दर काव्य पंक्तियों में इसका वर्णन किया है-

बाली सिंघल जबद्वीपे
प्रांतर माझे उठे ।
कोतो मठ कोतो मन्दिर
कोतो प्रस्तरे फूल फोटे ।।
तादेर मुखेर मधुमय बानी
सुने थेमें जाय सब हानाहानी ।
अभ्युदयेर सभ्यता जागे
विश्वेर घरे-घरे ।।

(सिंहल और जावा-द्वीप तक भारतीय संस्कृति का प्रभाव फैला हुआ था। जगह-जगह मठ-मंदिर थे, जहाँ जीवन की सुगंध फूलों-सी बिखरती थी । भारत की मधुर और ज्ञानमयी वाणी सुनकर अन्य देशों में भी वैर-भाव और अशांति समाप्त हो जाती थी)

आइए, भारत का यही आत्मस्वरूप आज की देश-काल-परिस्थिति से सुसंगत शैली में फिरसे विश्व में खडा करना है। पूर्वज प्रदत्त इस कर्तव्य को, विश्व की आज की आवश्यकता को, पूर्ण करने के लिए हम सब मिलकर, साथ चलकर, अपने कर्तव्यपथ पर अग्रसर होने के लिए आज की विजयादशमी के मुहूर्त पर सीमोल्लंघन को संपन्न करें ।

।।भारत माता की जय।।

■

महापुरुषों का संस्मरण

रामनाथ कोविन्द
पूर्व राष्ट्रपति

विजयादशमी उत्सव' का यह दिन, संघ का 'शतक-पूर्ण-उत्सव' भी है। आज विश्व की सबसे प्राचीन संस्कृति का संवहन करने वाली आधुनिक विश्व की सबसे बड़ी स्वयंसेवी संस्था का शताब्दी समारोह संपन्न हो रहा है।

राष्ट्रीय-निर्माताओं में ऐसे दो डॉक्टर भी हैं, जिनका मेरे जीवन-निर्माण में अत्यंत महत्वपूर्ण स्थान रहा है। वे दो महापुरुष हैं - डॉ. केशव बलिराम हेडगेवार और डॉ. भीमराव रामजी आंबेडकर।

आज के दिन, मैं डॉ. हेडगेवार जी, श्री गुरुजी, श्री बालासाहेब देवरस जी, श्री रज्जू भैया जी तथा श्री सुदर्शन जी को हृदय से श्रद्धांजलि अर्पित करता हूँ।

संघ समाज के प्रत्येक वर्ग - किसान, वैज्ञानिक, विद्यार्थी, व्यवसायी, जनजातीय, स्वास्थ्य सेवक, श्रमिक, अधिवक्ता, सैनिक, कलाकार, बालक और मातृशक्ति को विभिन्न आयामों से जोड़ने का सत्कार्य कर रहा है।

आज हजारों शाखाओं में लाखों स्वयंसेवक व्यक्तित्व निर्माण, चरित्र निर्माण, समाज निर्माण और राष्ट्र निर्माण के लक्ष्य के साथ निरंतर आगे बढ़ रहे हैं।

25 नवंबर, 1949 को बाबासाहब ने संविधान सभा में दिए गए अपने ऐतिहासिक संबोधन में कुछ चिंताएँ व्यक्त की थीं, जो मुझे संघ की चिंताओं और चिंतन में भी दिखाई पड़ती हैं।

जनवरी 1940 में बाबासाहब आंबेडकर द्वारा महाराष्ट्र के सातारा जिले के कराड़ नगर में राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ की शाखा में जाकर लोगों से मिलने, अपनेपन की भावना व्यक्त करने और सहायता का प्रस्ताव देने का उल्लेख, संघ के समरसतापूर्ण दर्शन एवं व्यवहार शैली का ऐतिहासिक प्रमाण है।

बाबासाहब के अपने साप्ताहिक पत्र 'जनता' में भी यह समाचार छपा था कि कराड़ म्युनिसिपैलिटी के एक समारोह में भाग लेने के बाद बाबासाहब राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के लोगों से मिले और आवश्यकता पड़ने पर उनकी सहायता करने का आश्वासन दिया।

प्रत्येक भारतीय को संघ के एकात्मता स्तोत्र को अवश्य पढ़ना चाहिए। इस स्तोत्र में भारतीय इतिहास, भूगोल, संस्कृति, जीवन-मूल्य और सामाजिक समावेश तथा समरसता की श्रेष्ठ अभिव्यक्ति विद्यमान है।

'एक मंदिर, एक कुआँ, एक श्मशान-स्थल' जैसे प्रयासों से, विभाजक प्रवृत्तियों को दूर किया जा रहा है।

संघ में व्याप्त समरसता, समानता और जाति-भेद से पूर्णतः मुक्त व्यवहार को देखकर महात्मा गांधी भी बहुत प्रभावित हुए थे, जिसका विस्तृत विवरण संपूर्ण गांधी वाङ्मय में मिलता है।

आर्थिक आत्म-निर्भरता तथा स्वदेशी को प्रोत्साहन देना, संघ की प्राथमिकता रही है। मुझे विश्वास है कि संघ के शताब्दी वर्ष के दौरान पंच-परिवर्तन कार्यक्रम में शामिल किया गया 'पर्यावरण संरक्षण' का अभियान, प्रकृति के साथ सामंजस्यपूर्ण जीवनशैली के विस्तार में सहायक सिद्ध होगा।

मुझे विश्वास है कि वर्ष 2047 तक विकसित भारत तथा पूर्णतः समरस और एकात्म भारत के निर्माण में संघ का असीम योगदान रहेगा।

ISSN No. 2581-3528

संघ शताब्दी पर प्रधानमंत्री का संदेश राष्ट्र की समरस धारा का उत्सव

नई दिल्ली स्थित डॉ. अंबेडकर अंतर्राष्ट्रीय केंद्र में राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के शताब्दी वर्ष का भव्य आयोजन हुआ। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने इस ऐतिहासिक अवसर को संबोधित करते हुए कहा कि "संघ उस शाश्वत राष्ट्रीय चेतना का अवतार है, जो हर युग की चुनौतियों का सामना करने के लिए नए रूप में प्रकट होती रही है।"

प्रधानमंत्री ने नवरात्रि और महानवमी की शुभकामनाओं के साथ कहा कि विजयादशमी असत्य पर सत्य और अन्याय पर न्याय की विजय का पर्व है, और इसी पावन दिन पर संघ ने 100 वर्ष पूर्व अपनी यात्रा शुरू की थी। उन्होंने संघ के संस्थापक पूज्यनीय डॉ. हेडगेवार को नमन करते हुए कहा कि संघ ने भारतीय संस्कृति और राष्ट्र चेतना की सतत् धारा को मूर्त रूप दिया है।

प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के शताब्दी वर्ष को ऐतिहासिक अवसर बताते हुए कहा कि इसका साक्षी बनना वर्तमान पीढ़ी के स्वयंसेवकों के लिए सौभाग्य की बात है। उन्होंने राष्ट्रसेवा के संकल्प में समर्पित असंख्य स्वयंसेवकों को अपनी शुभकामनाएं अर्पित कीं और संघ के संस्थापक पूज्यनीय डॉ. हेडगेवार को श्रद्धांजलि दी।

इस अवसर पर प्रधानमंत्री ने घोषणा की कि संघ की गौरवशाली 100 वर्ष की यात्रा के उपलक्ष्य में भारत सरकार ने एक विशेष डाक टिकट और स्मारक सिक्का जारी किया है। 100 रुपये के इस सिक्के पर एक ओर राष्ट्रीय प्रतीक चिह्न अंकित है, तो दूसरी ओर वरद मुद्रा में भारत माता की भव्य छवि है, जिन्हें स्वयंसेवक नमन कर रहे हैं। श्री मोदी ने विशेष रूप से उल्लेख किया कि स्वतंत्र भारत के इतिहास में संभवतः यह पहली बार है जब भारत माता की छवि भारतीय मुद्रा पर अंकित हुई है।

सिक्के पर संघ का मार्गदर्शक आदर्श वाक्य – "राष्ट्राय स्वाहा, इदं राष्ट्राय, इदं न मम" – भी अंकित है, जो राष्ट्र को सर्वोपरि मानने और व्यक्तिगत स्वार्थ से ऊपर उठने की प्रेरणा देता है।

राष्ट्र निर्माण की यात्रा में व्यक्तित्व निर्माण और अनुशासन की भूमिका सबसे महत्वपूर्ण होती है। इसी संदर्भ में प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने पूज्य डॉ. केशव बलिराम हेडगेवार की शिक्षाओं को याद करते हुए कहा कि "राष्ट्र तभी वास्तविक रूप से सशक्त होगा जब प्रत्येक नागरिक अपने दायित्व के प्रति जागरूक होगा; भारत तभी प्रगति करेगा जब हर नागरिक राष्ट्र के लिए जीना सीखेगा।"

प्रधानमंत्री ने डॉ. हेडगेवार के विचारों की उस गहराई को रेखांकित किया, जिसने उन्हें एक अद्वितीय राष्ट्रशिल्पी के रूप में प्रतिष्ठित किया। उनका मार्गदर्शक सिद्धांत था-"लोगों को वैसे ही स्वीकार करो जैसे वे हैं, और उन्हें वैसा बनाओ जैसा उन्हें होना चाहिए।" यही दर्शन आज भी संघ की कार्यप्रणाली की आत्मा है।

प्रधानमंत्री ने डॉ. हेडगेवार के कार्य को एक कुम्हार की साधना से जोड़ा। जैसे कुम्हार साधारण मिट्टी को मेहनत और लगन से गढ़कर मजबूत ईंट में बदल देता है और उन्हीं ईंटों से एक भव्य संरचना का निर्माण करता है, उसी प्रकार डॉ. हेडगेवार ने सामान्य व्यक्तियों को चुना, उन्हें अनुशासन, दृष्टि और समर्पण के माध्यम से प्रशिक्षित किया और राष्ट्र सेवा के लिए स्वयंसेवकों की एक सशक्त धारा तैयार की। यही कारण है कि प्रधानमंत्री ने कहा -"संघ वह स्थान है जहां सामान्य लोग असाधारण और अभूतपूर्व कार्यों को पूरा करने के लिए एकजुट होते हैं।" यह वाक्य केवल संघ के लिए ही नहीं, बल्कि भारत के प्रत्येक नागरिक के लिए प्रेरणास्रोत है।

अपने संबोधन में प्रधानमंत्री ने संघ को एक नदी की धारा से तुलना करते हुए कहा कि जिस प्रकार नदी अपने मार्ग में गांव-गांव जीवन का संचार करती है, उसी प्रकार संघ ने शिक्षा, समाज सेवा, कृषि, महिला सशक्तिकरण, जनजातीय विकास और संस्कृति सहित अनेक क्षेत्रों में समाज को पोषित किया है। उन्होंने कहा कि शाखाएं "मैं से हम" की यात्रा का प्रशिक्षण देती हैं, जहां अनुशासन और सेवा का भाव विकसित होता है।

उन्होंने स्पष्ट किया कि संघ की 100 वर्ष की यात्रा तीन स्तंभों पर खड़ी है - राष्ट्र निर्माण का महान लक्ष्य, वैयक्तिक विकास का मार्ग और शाखाओं की गतिशील कार्यप्रणाली। डॉ. हेडगेवार ने समझा था कि राष्ट्र तभी सशक्त होगा जब सामान्य नागरिक अनुशासित प्रशिक्षण से असाधारण कार्य कर सकेगा।

प्रधानमंत्री ने संघ की ऐतिहासिक भूमिका का स्मरण किया - स्वतंत्रता संग्राम से लेकर 1942 के आंदोलन, हैदराबाद व गोवा मुक्ति संग्राम, विभाजन कालीन शरणार्थी सेवा, 1962 के युद्ध और कोविड-19 महामारी तक हर संकट में स्वयंसेवकों की सक्रियता का उल्लेख किया।

उन्होंने सामाजिक समरसता के संघीय प्रयासों को रेखांकित करते हुए कहा कि महात्मा गांधी तक ने संघ की समानता भावना की प्रशंसा की थी। छुआछूत और भेदभाव के विरुद्ध संघ के सभी शीर्ष नेतृत्व ने स्पष्ट और कठोर रुख अपनाया और "एक कुआं, एक मंदिर, एक श्मशान" का संकल्प समाज के लिए प्रस्तुत किया।

प्रधानमंत्री ने कहा कि जिस प्रकार महान नदियां अपने तटों पर मानव सभ्यताओं का पोषण करती हैं, उसी प्रकार राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ ने भी असंख्य लोगों को पोषित और समृद्ध किया है। एक नदी जो अपनी निकटस्थ भूमि, गांवों और क्षेत्रों को पल्लवित और पोषित करते हुए बहती है और संघ, जिसने भारतीय समाज के हर कार्यक्षेत्र और राष्ट्र के हर क्षेत्र को छुआ है, के बीच तुलना करते हुए, श्री मोदी ने इस बात पर जोर दिया कि यह निरंतर समर्पण और एक शक्तिशाली राष्ट्रीय धारा का परिणाम है।

प्रधानमंत्री ने कहा कि जिस प्रकार महान नदियां अपने तटों पर मानव सभ्यताओं का पोषण करती हैं, उसी प्रकार राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ ने भी असंख्य लोगों को पोषित और समृद्ध किया है। एक नदी जो अपनी निकटस्थ भूमि, गांवों और क्षेत्रों को पल्लवित और पोषित करते हुए बहती है और संघ, जिसने भारतीय समाज के हर कार्यक्षेत्र और राष्ट्र के हर क्षेत्र को छुआ है, के बीच तुलना करते हुए, श्री मोदी ने इस बात पर जोर दिया कि यह निरंतर समर्पण और एक शक्तिशाली राष्ट्रीय धारा का परिणाम है।

जनजातीय समाज के बीच संघ के दशकों पुराने कार्यों की सराहना करते हुए प्रधानमंत्री ने कहा कि सेवा भारती, विद्या भारती और वनवासी कल्याण आश्रम ने आदिवासी समाज को आत्मगौरव और आत्मविश्वास दिया है। पिछली शताब्दी में आरएसएस ने अपनी सक्रियता और सेवा कार्यों से यह सिद्ध किया है कि उसका दृष्टिकोण केवल विचारधारा तक सीमित नहीं है, बल्कि वह समाज के प्रत्येक क्षेत्र में सकारात्मक परिवर्तन का संवाहक है। शिक्षा, स्वास्थ्य, सामाजिक कल्याण और आपदा राहत जैसे क्षेत्रों में संघ और उसके स्वयंसेवकों ने उल्लेखनीय योगदान दिया है। बाढ़, भूकंप, चक्रवात और महामारी जैसे संकटों में संघ के कार्यकर्ता राहत और पुनर्वास के अग्रिम मोर्चे पर सक्रिय दिखाई दिए हैं।

भविष्य की चुनौतियों का उल्लेख करते हुए उन्होंने कहा कि भारत विकसित राष्ट्र बनने की राह पर है और इसके लिए पाँच संकल्प आवश्यक हैं - आत्म-जागरूकता, सामाजिक समरसता, कुटुंब प्रबोधन, नागरिक अनुशासन और पर्यावरण चेतना। प्रधानमंत्री ने कहा कि यही संघ की विचारधारा है और यही आज के भारत की सबसे बड़ी आवश्यकता भी है।

उन्होंने विश्वास व्यक्त किया कि 2047 तक भारत सेवा, विज्ञान, समरसता और आत्मविश्वास से निर्मित एक गौरवशाली राष्ट्र बनेगा और संघ की धारा "एक भारत, श्रेष्ठ भारत" के संकल्प को साकार करेगी। ■

ISSN No. 2581-3528

संघ के शताब्दी वर्ष का विराट पथ संचलन

प्रोफेसर (डॉ.) हरेन्द्र सिंह
सरकार द्वारा 'शिक्षक श्री' पुरस्कार से विभूषित
ख्यातिप्राप्त शिक्षाविद, शैक्षिक प्रशासक
प्रोफेसर एवं राष्ट्रवादी चिन्तक

राष्ट्र की चेतना को सजीव रखने वाले संगठनों का मूल्यांकन केवल वर्षों की गिनती से नहीं, बल्कि उनके द्वारा समाज में उत्पन्न आत्मविश्वास, अनुशासन और एकात्मता की भावना से किया जाता है। राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ, जिसने 1925 में डॉ. हेडगेवार जी के नेतृत्व में नागपुर की एक छोटी शाखा से अपनी यात्रा प्रारंभ की थी, आज अपने शताब्दी वर्ष में प्रवेश कर रहा है। इस अवसर पर देश के कोने–कोने में आयोजित "विराट पथ संचलन" केवल एक स्मरणोत्सव या प्रदर्शन मात्र नहीं, बल्कि एक सजीव प्रमाण हैं उस संगठनात्मक अनुशासन, आत्मीयता और राष्ट्रीय भाव का, जिसे संघ ने पिछले सौ वर्षों में भारतीय समाज की चेतना में गहराई तक स्थापित किया है और इसीलिए आज वह समाज के प्रति उसकी अटूट निष्ठा का सजीव प्रतीक बन गया है।

संघ का यह शताब्दी वर्ष अपने आप में ऐतिहासिक है। यह वह समय है जब भारत विश्व पटल पर एक आत्मविश्वासी राष्ट्र के रूप में उभर रहा है। विज्ञान, तकनीक, अर्थव्यवस्था और अंतरराष्ट्रीय राजनीति के क्षेत्र में भारत की भूमिका निरंतर बढ़ रही है। ऐसे दौर में संघ का शताब्दी वर्ष एक नए आत्मबोध का क्षण है, जहां संगठन स्वयं को नहीं, बल्कि उस भारत के स्व के भाव को पुनः स्थापित कर रहा है, जो इस भूमि की आत्मा में निहित है। विराट पथ संचलन इसी भाव का मूर्त रूप है, जब हजारों स्वयंसेवक, एक वेश में, एक स्वर में, एक ही लय में आगे बढ़ते हैं, तो वह दृश्य केवल संघ का नहीं, राष्ट्र की एकात्मता का प्रतीक बन जाता है।

देश के विभिन्न प्रांतों में जब ये पथ संचलन निकले, तब नगरों की गलियाँ केसरिया रंग में रंग गईं, घरों की छतों से मातृशक्ति ने पुष्प वर्षा की, बच्चों ने 'वंदे मातरम्' के गीत गाये। हर नगर, हर मोहल्ला इस एकात्मता के साक्षात्कार का साक्षी बना। भोपाल, वाराणसी, नागपुर, इंदौर, दिल्ली, धारवाड़, मथुरा, पुणे, चेन्नई, लखनऊ हर जगह यह संचलन समान उत्साह और अनुशासन के साथ निकला। इन पथ संचलनों में कोई राजनीतिक प्रदर्शन नहीं था, कोई सत्ता की आकांक्षा नहीं थी, यह राष्ट्रभाव, शौर्य और अनुशासन का सार्वजनिक दर्शन था। छोटे–छोटे नगरों से लेकर महानगरों तक, संघ के गणवेशधारी स्वयंसेवकों की कतारें न केवल देखने योग्य थीं, बल्कि प्रेरणा देने वाली भी थीं। बच्चे, युवा, और वृद्ध सभी आयु वर्गों के स्वयंसेवक अपने दंड और ध्वज के साथ पंक्तिबद्ध होकर जब "भारत माता की जय" का उद्घोष करते हुए बढ़ते, तो प्रत्येक दर्शक के मन में यह भाव जागता कि यह संगठन केवल एक संस्था नहीं, बल्कि राष्ट्र की आत्मा का प्रवाह है।

प्रत्येक स्वयंसेवक के लिए यह संचलन वर्षों की शाखा–प्रशिक्षण और आत्मसंयम का प्रतिफल था, एक साधना थी। यह आयोजन संघ के मूल उद्देश्य की पुनर्पुष्टि थी कि राष्ट्र सेवा केवल शब्दों या नारों से नहीं, बल्कि अनुशासित जीवन और समर्पित कर्म से संभव है। संघ का यह "शताब्दी पथ संचलन" स्वयंसेवकों के लिए आत्मपरीक्षण और आत्मप्रकाश का अवसर बना, एक आह्वान कि वे अपने भीतर के संगठन–भाव को और अधिक सशक्त करें।

इन आयोजनों की तैयारी भी अपने आप में एक विशाल अभ्यास थी, संघ की कार्यपद्धति की मिसाल थी। महीनों पहले से स्वयंसेवकों ने स्थानीय स्तर पर योजना बनाई। नगरों में मार्ग चिन्हित किए गए, नागरिक समितियां बनीं, प्रशासन से समन्वय स्थापित हुआ। समाज का हर वर्ग इस आयोजन का सहभागी बना। इस से स्पष्ट होता है कि संघ आज केवल

शाखाओं तक सीमित नहीं, बल्कि शिक्षा, ग्रामोन्नति, महिला-सशक्तिकरण, पर्यावरण, स्वास्थ्य और सेवा के क्षेत्रों में भी व्यापक सामाजिक चेतना का संवाहक बन चुका है। संघ के पथ सञ्चलन के दृश्य इस बात का प्रमाण हैं कि संघ का कार्य अब केवल पुरुष-केन्द्रित नहीं, बल्कि समाज के हर वर्ग की सहभागिता से समरस रूप ले चुका है।

कुछ स्थानों पर विदेशी नागरिकों ने भी इन पथ संचलनों को देखकर भारतीय संगठन शक्ति, अनुशासन और आत्मीयता की सराहना की। यह अपने आप में भारत की सॉफ्ट पावर का परिचायक है, जिसे बिना किसी राजनीतिक या धार्मिक नारे के, केवल एक समान वेश, संयमित चाल और सामूहिक निष्ठा के माध्यम से संघ द्वारा भारतीय संस्कृति की सजीवता के द्वारा परिचित कराया गया। यह अनुशासन, जो किसी भय से नहीं, बल्कि आत्म-संयम और राष्ट्र-निष्ठा से उत्पन्न होता है, भारतीय सभ्यता की विशेष पहचान है।

डॉ. केशव बलिराम हेडगेवार जी ने कहा था, "संघ का लक्ष्य मनुष्य बनाना है, और मनुष्य के माध्यम से राष्ट्र का उत्थान करना।" शताब्दी वर्ष का यह संचलन उसी विचार का मूर्त रूप बना। जब लाखों स्वयंसेवक एक स्वर में, एक दिशा में आगे बढ़े, तो लगा मानो राष्ट्र की आत्मा स्वयं चल रही हो। यह आयोजन न केवल बीते सौ वर्षों की साधना का स्मरण था, बल्कि आने वाले शताब्दी की दिशा का भी संकेत भी है।

यह भी महत्वपूर्ण है कि संघ का यह शताब्दी आयोजन ऐसे समय में हो रहा है जब भारत विश्व के नेतृत्व की भूमिका में आगे बढ़ रहा है। जी-20, अंतरिक्ष विज्ञान, डिजिटल क्रांति, जलवायु परिवर्तन और वैश्विक संघर्षों के बीच भारत का दृष्टिकोण 'विश्व को एक परिवार मानने' वाला रहा है। संघ का मूलमंत्र "वसुधैव कुटुम्बकम्" की भावना अब केवल शास्त्रों तक सीमित नहीं रही, बल्कि वैश्विक नीति का मार्गदर्शक बन रही है। अतः शताब्दी वर्ष का पथ संचलन इस दृष्टि का द्योतक है, कि यह केवल राष्ट्रीय नहीं, बल्कि वैश्विक एकात्मता का भी प्रतीक है।

इतिहास के संदर्भ में यदि देखें, तो संघ ने अनेक संकटों में देश को एक सूत्र में बाँधने का कार्य किया है, विभाजन के समय राहत कार्य, 1962, 1965 और 1971 के युद्धों में नागरिक सहायता, 1975 के आपातकाल में लोकतंत्र की रक्षा, 1990 के दशक में सामाजिक समरसता के प्रयास, और कोविड काल में सेवा भारती के माध्यम से चलाए गए राहत अभियान आदि ये सभी उदाहरण बताते हैं कि संघ का कार्यकाल मात्र वैचारिक नहीं, बल्कि व्यावहारिक राष्ट्र-सेवा से जुड़ा रहा है। ऐसे में शताब्दी वर्ष का आयोजन उस निरंतर साधना की परिणति के रूप में देखा जाना चाहिए।

विराट पथ संचलन का एक अन्य अर्थ यह भी है कि समाज में 'संगठित जीवन' की संस्कृति को पुनः स्थापित किया जाए। आधुनिकता और उपभोक्तावाद के इस दौर में, जहाँ व्यक्ति अपने दायित्वों से विमुख हो रहा है, संघ का यह अनुशासित प्रदर्शन हमें यह याद दिलाता है कि राष्ट्रीय जीवन का आधार केवल व्यक्तिगत सफलता नहीं, बल्कि सामूहिक चेतना है। इस चेतना के बिना राष्ट्र केवल एक भौगोलिक इकाई रह जाता है; और संघ का यही उद्देश्य है, कि भारत केवल भूमि का नहीं, बल्कि भाव का राष्ट्र बने।

यह भी उल्लेखनीय है कि शताब्दी वर्ष के पथ संचलनों में बड़ी संख्या में युवा वर्ग शामिल हुआ। यह इस बात का संकेत है कि नई पीढ़ी संघ की विचारधारा को केवल परंपरा के रूप में नहीं, बल्कि आधुनिक राष्ट्र-निर्माण की ऊर्जा के रूप में देख रही है। टेक्नोलॉजी, स्टार्टअप, सामाजिक मीडिया और आधुनिक शिक्षा से जुड़ी यह पीढ़ी जब शाखा और पथ संचलन के अनुशासन से जुड़ती है, तो यह भारत के भविष्य के लिए एक सकारात्मक संकेत है।

संपूर्ण दृष्टि से देखा जाए तो संघ का विराट पथ संचलन भारतीय समाज की अदृश्य एकता का दृश्य रूप है। इसने यह संदेश दिया कि राष्ट्र का उत्थान केवल सरकारों या नीतियों से नहीं होता, बल्कि नागरिकों के जाग्रत और संगठित होने से होता है। संघ की यह कार्यपद्धति किसी के विरोध पर आधारित नहीं, बल्कि स्वयं के अनुशासन और समाज के उत्थान पर आधारित है। यही कारण है कि शताब्दी वर्ष के पथ संचलनों को केवल संघ का कार्यक्रम न मानकर, भारतीय संस्कृति की सामूहिक शक्ति का उत्सव कहा जाना चाहिए।

आज जब भारत अपनी सभ्यता की पुनर्स्थापना के स्वर्ण युग की ओर अग्रसर है, तब संघ का यह विराट पथ संचलन उस यात्रा का आरंभिक स्वर है। इसमें दिखने वाली एकरूपता, आत्मविश्वास और संगठन-शक्ति केवल एक संस्था की नहीं, बल्कि एक राष्ट्र की आत्मा की अभिव्यक्ति है। यह आयोजन आने वाली पीढ़ियों के लिए प्रेरणा बनेगा कि जब समाज संगठित होता है, तो कोई शक्ति उसे रोक नहीं सकती।

राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के शताब्दी वर्ष का यह विराट पथ संचलन इतिहास के पन्नों में केवल एक आयोजन के रूप में नहीं, बल्कि एक युगचेतना के पुनर्जागरण के रूप में दर्ज होगा, जहाँ एक संगठन ने अपने अस्तित्व से परे जाकर पूरे राष्ट्र को उसकी आत्मा का स्मरण कराया। यही उस साधना का सार है जो संघ ने सौ वर्षों में सींची है "हम हैं, तो राष्ट्र है; और राष्ट्र है, तो हम हैं।" यह पथ संचलन, वास्तव में, भारत की अखंड यात्रा का प्रतीक है जो सहस्राब्दियों से चल रही है और आने वाले युगों तक प्रेरणा बनकर प्रवाहित होती रहेगी। ■

ISSN No. 2581-3528

वर्तमान सामाजिक समस्याओं के समाधान में पंच परिवर्तन का महत्व

अनुराग शुक्ला
PGT at Shemford Futuristic School-

परिवर्तन जीवन का शाश्वत नियम है। समय, परिस्थिति और समाज के साथ मान्यताएँ बदलतीं रहतीं हैं। यह बदलाव कभी धीमे-धीमे होता है तो कभी युगांतकारी स्वरूप में। आज का भारत भी एक ऐसे ही निर्णायक मोड़ पर खड़ा है। विज्ञान और तकनीक के क्षेत्र में चमत्कारिक प्रगति करने के बावजूद हम अपने जीवन में अजीब-सी खालीपन और बेचैनी महसूस करते हैं। भौतिक विकास के साथ-साथ समाज को जिन मूल्यों और आदर्शों की जरूरत थी, वे धीरे-धीरे पीछे छूटते चले गए। पर्यावरण असंतुलन, सामाजिक विघटन, परिवारों का टूटना, नैतिक मूल्यों का पतन, उपभोक्तावाद, अंधानुकरण और आत्मकेंद्रित जीवनशैली ये सब हमारी तेज प्रगति की छाया में जन्मी समस्याएँ हैं। ये समस्याएँ केवल भारत की नहीं, पूरे विश्व की चिंता बन चुकी हैं। किंतु भारत की विशेषता यह है कि उसने हमेशा केवल भौतिक उन्नति ही नहीं, बल्कि जीवन की आध्यात्मिक और नैतिक उन्नति को भी महत्व दिया है। जब भी दुनिया किसी संकट में पड़ी है, भारत ने अपनी सांस्कृतिक विरासत और जीवन-दर्शन के आधार पर मार्ग दिखाया है। आज भी भारत के पास अपने संकटों से ही नहीं, बल्कि समूचे विश्व को दिशा देने की क्षमता है। इसी संदर्भ में राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के सरसंघचालक श्री मोहन भागवत जी ने समाज के सामने "पंच परिवर्तन" की संकल्पना रखी। यह कोई क्षणिक विचार नहीं, बल्कि जीवन की जड़ों तक पहुँचने वाला मार्गदर्शन है। भागवत जी ने स्पष्ट किया कि यदि हमें समाज और राष्ट्र की दशा सुधारनी है तो यह कार्य किसी बाहरी शक्ति या विदेशी विचारधारा से नहीं होगा, बल्कि यह परिवर्तन भीतर से आएगा। पंच परिवर्तन का विचार व्यक्ति से शुरू होकर परिवार, समाज, प्रकृति और राष्ट्र तक विस्तृत है। सबसे पहले परिवर्तन व्यक्ति के भीतर होना चाहिए। जब व्यक्ति संयम, अनुशासन, ईमानदारी, कर्तव्यनिष्ठा और सादगी से जीना सीखता है, तो उसका यह आचरण उसके परिवार को प्रभावित करता है। एक सुसंस्कारित और समरस परिवार ही स्वस्थ समाज की नींव रखता है। समाज की एकता और समरसता से ही राष्ट्र शक्तिशाली बनता है। यही विचार पंच परिवर्तन का सार है। हमारे देश के इतिहास में अनेक उदाहरण हैं, जिन्होंने दिखाया कि बदलाव की शुरुआत व्यक्ति से होती है। महात्मा गांधी इसका उज्ज्वल उदाहरण हैं। उन्होंने अपने जीवन में सत्य और अहिंसा को अपनाया और वही आचरण करोड़ों भारतीयों की प्रेरणा बना। उन्होंने यह सिद्ध कर दिया कि आत्मबल और आचरण की शक्ति किसी भी हिंसक आंदोलन से अधिक प्रभावशाली होती है। भारतीय परंपरा का आदर्श भी यही रहा है-"आत्म दीपो भव" -पहले स्वयं को आलोकित करो, तभी संसार को प्रकाशमान कर पाओगे। व्यक्ति में यह परिवर्तन तभी संभव है जब वह उपभोग के मोह से मुक्त होकर सादगी और संयम को अपनाए। उपभोक्तावाद न केवल संसाधनों का अंधाधुंध दोहन करता है, बल्कि व्यक्ति के मन को भी असंतोष और लालसा से भर देता है। संयमपूर्ण जीवन हमें अनावश्यक खर्चों और दिखावे से बचाता है और आत्मिक संतोष प्रदान करता है। यह दृष्टिकोण न केवल व्यक्ति बल्कि समाज और पर्यावरण के लिए भी हितकारी है। इसके बाद परिवार में परिवर्तन की आवश्यकता है। भारतीय संस्कृति में परिवार मात्र रक्त-संबंध नहीं, बल्कि संस्कारों का विद्यालय रहा है। यह वह स्थान है जहाँ बच्चे प्रेम, सहयोग, जिम्मेदारी और कर्तव्य का पाठ सीखते हैं। आज न्यूक्लियर फैमिली और पश्चिमी जीवनशैली के प्रभाव से परिवार बिखर रहे हैं। इस टूटन ने समाज में संवाद, अपनत्व और संस्कारों की जड़ें कमजोर की हैं।

मोहन भागवत जी ने परिवार को मजबूत बनाने के लिए कुटुम्ब प्रबोधन की संकल्पना प्रस्तुत की। इसमें उन्होंने छह बातें विशेष रूप से

सुझाईं –परिवार में साथ मिलकर भजन और प्रार्थना करना ताकि आध्यात्मिक जुड़ाव बढ़े; दिन में कम–से–कम एक बार साथ भोजन करना जिससे संवाद और आत्मीयता कायम रहे; घर को ऐसा बनाना जिसमें संस्कृति और महापुरुषों की छवि झलके; घर की बातचीत में मातृभाषा का प्रयोग करना जिससे स्वाभिमान और अपनी जड़ों से जुड़ाव बना रहे; पहनावे में सादगी और संस्कार झलके; और समय–समय पर देश के ऐतिहासिक व तीर्थस्थलों का भ्रमण कर नई पीढ़ी को गौरवशाली परंपरा से परिचित कराना। ये सरल–से लगने वाले उपाय परिवार के वातावरण को बदलने की क्षमता रखते हैं।

तीसरा आयाम है समाज में समरसता की स्थापना। किसी भी राष्ट्र की शक्ति उसके समाज की एकता में निहित होती है। लेकिन दुर्भाग्यवश, हमारे समाज में जातिगत विभाजन की खाई गहरी हुई। यह विभाजन हमारे स्वाभाविक जीवन का हिस्सा नहीं था, बल्कि विदेशी आक्रमणकारियों और औपनिवेशिक शासकों ने इसे जान–बूझकर भड़काया। उन्होंने हमारी कमजोरियों का फायदा उठाकर हमें आपस में बाँट दिया। इससे न केवल समाज कमजोर हुआ बल्कि हमारी अर्थव्यवस्था और संस्कृति पर भी चोट पहुँची।

डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर ने इस अन्याय के विरुद्ध आवाज उठाई। वे हिंदू धर्म के विरोधी नहीं थे, बल्कि उसमें फैली कुरीतियों को दूर करना चाहते थे। उनका मानना था कि सामाजिक न्याय और समानता के बिना राष्ट्र प्रगति नहीं कर सकता। उनका जीवन और संघर्ष हमें यह सिखाता है कि समाज में बदलाव केवल कानून या दंड से नहीं, बल्कि दृष्टिकोण बदलने से आता है। संघ ने भी स्थापना के समय से ही समाज को एकजुट करने के लिए "समता, ममता और समरसता" को अपनाया। यह दृष्टिकोण किसी पर दबाव डालने या टकराव पैदा करने का नहीं, बल्कि हृदय परिवर्तन करने का था। अनेक सेवा–कार्यों के माध्यम से संघ ने जाति और पंथ से ऊपर उठकर समाज के वंचित वर्गों तक शिक्षा, स्वास्थ्य और आत्मसम्मान पहुँचाया। वनवासी कल्याण आश्रम और सेवा भारती जैसे संगठनों ने देश के कोने–कोने में आदिवासी और वंचित समाज के लिए विद्यालय, छात्रावास, अस्पताल और अन्य कल्याणकारी संस्थाएँ स्थापित कर समाज को मजबूत करने का कार्य किया। चौथा आयाम है प्रकृति के साथ हमारे संबंधों में परिवर्तन। आधुनिक विकास की अंधी दौड़ ने हमें प्रकृति से दूर कर दिया है। जंगल कट रहे हैं, नदियाँ सूख रही हैं, हवा और मिट्टी प्रदूषित हो रही है। जलवायु परिवर्तन आज मानवता के अस्तित्व पर संकट के बादल मंडरा रहा है। भारतीय संस्कृति ने हमेशा प्रकृति को माता का स्थान दिया है–"माता भूमिः पुत्रोऽहं पृथिव्याः"। इसलिए हमें प्रकृति के साथ उपभोग नहीं, सहजीवन का रिश्ता बनाना होगा।

मोहन भागवत जी का आह्वान–"वृक्ष लगाओ, पानी बचाओ, पॉलिथीन हटाओ" –केवल पर्यावरण अभियान का नारा नहीं, बल्कि जीवनशैली का संदेश है। ऊर्जा की बचत, जल का विवेकपूर्ण उपयोग और हानिकारक रसायनों से बचाव – ये बातें केवल सरकार के प्रयासों से नहीं, बल्कि आम लोगों की आदतों में बदलाव से संभव होंगी। "चिपको आंदोलन" की महिलाओं ने जिस तरह वृक्षों को बचाने के लिए अपने शरीरों से उन्हें ढँक लिया, वह दिखाता है कि प्रकृति–संरक्षण एक सामूहिक संकल्प से ही सफल हो सकता है।

पंच परिवर्तन का विचार व्यक्ति से शुरू होकर परिवार, समाज, प्रकृति और राष्ट्र तक विस्तृत है। सबसे पहले परिवर्तन व्यक्ति के भीतर होना चाहिए। जब व्यक्ति संयम, अनुशासन, ईमानदारी, कर्तव्यनिष्ठा और सादगी से जीना सीखता है, तो उसका यह आचरण उसके परिवार को प्रभावित करता है। एक सुसंस्कारित और समरस परिवार ही स्वस्थ समाज की नींव रखता है। समाज की एकता और समरसता से ही राष्ट्र शक्तिशाली बनता है। यही विचार पंच परिवर्तन का सार है।

पंच परिवर्तन का अंतिम आयाम राष्ट्र–जीवन में परिवर्तन है। राष्ट्र कोई भौगोलिक इकाई मात्र नहीं है; यह इतिहास, संस्कृति और परंपराओं का जीवंत प्रवाह है। राष्ट्र तभी शक्तिशाली बनेगा जब उसके नागरिक अपने कर्तव्यों के प्रति सजग होंगे और व्यक्तिगत स्वार्थ से ऊपर उठकर राष्ट्रहित को प्राथमिकता देंगे। जब समाज संगठित, आत्मनिर्भर और कर्तव्यनिष्ठ होगा, तभी राष्ट्र समृद्ध और सुरक्षित बनेगा।

हमारे स्वतंत्रता संग्राम का इतिहास बताता है कि लाखों सामान्य नागरिकों के छोटे–छोटे त्याग ने ही भारत को आजादी दिलाई। यह त्याग और समर्पण ही राष्ट्र–जीवन में परिवर्तन का आधार है। आज हमें फिर उसी भावना की आवश्यकता है। बिजली, पानी, प्राकृतिक संसाधन और देश की हर उपलब्धि को हम तभी बचा पाएंगे जब इन्हें राष्ट्र की धरोहर मानकर संभालेंगे।

अंततः, पंच परिवर्तन केवल एक सिद्धांत नहीं, बल्कि जीवन जीने की समग्र पद्धति है। यह हमें बताता है कि भौतिक सुख–सुविधाओं से परे जाकर ही जीवन सार्थक होता है। आत्मसंयम, परिवार में प्रेम और संस्कार, समाज में समरसता, प्रकृति के साथ संतुलन और राष्ट्रहित की भावना–ये सब मिलकर न केवल भारत को बल्कि पूरे विश्व को शांति, संतुलन और समृद्धि की ओर ले जा सकते हैं।

भारत की सनातन संस्कृति ने युगों–युगों तक विश्व को मार्ग दिखाया है। आज आवश्यकता है कि हम अपने भीतर झाँकें, अपनी जड़ों की ओर लौटें और पंच परिवर्तन के इन सिद्धांतों को जीवन में अपनाएँ। ऐसा करके भारत न केवल अपने संकटों से उबरेगा, बल्कि विश्व को भी एक नई दिशा देगा। यही वह पथ है, जिस पर चलकर भारत पुनः "विश्वगुरु" की भूमिका निभा सकता है। ■

ISSN No. 2581-3528

पंच परिवर्तन
राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ का शताब्दी संकल्प

डॉ. नीलम कुमारी
एसोसिएट प्रोफेसर, अंग्रेजी विभाग
किसान पी.जी. कॉलेज, सिंभावली (हापुड़)
चौधरी चरण सिंह विश्वविद्यालय, मेरठ

संगठित हिंदू समाज एवं चरित्र निर्माण से राष्ट्र निर्माण के पुण्य ध्येय को समर्पित राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के शताब्दी वर्ष का प्रारंभ भारतीय सभ्यता एवं संस्कृति का कालजयी उद्घोष है और हजारों वर्षों से चली आ रही भारत की गौरवशाली परंपरा का पुनरुत्थान व अनादि राष्ट्र चेतना का पुण्य अवतार भी है। भगवान श्री कृष्ण ने गीता के चौथे अध्याय के सातवें श्लोक में कहा कि–

'यदा यदा हि धर्मस्य ग्लानिर्भवति भारत, अभ्युत्थानमधर्मस्य तदात्मानं सृजाम्यहम'

जिस प्रकार धर्म की रक्षा हेतु व धर्मनिहित राष्ट्र निर्माण हेतु विभिन्न युगों में भगवान विभिन्न रूपों में जन्म लेते रहे हैं और धर्म आधारित विचार देते रहे हैं। ऐसे ही राष्ट्र निर्माण हेतु विजयादशमी के दिन एक पावन विचार के रूप में राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ (RSS) का जन्म हुआ। जिसे हम सभी सामान्यतः संघ के नाम से जानते हैं।

राष्ट्र सर्वोपरि, सनातन संस्कृति की रक्षा और संगठित समाज निर्माण के पावन उद्देश्यों को लेकर 1925 में विजयादशमी के पवित्र दिन डॉ. केशव बलिराम हेडगेवार ने जिस बीज को नागपुर में बोया था, वह आज एक वटवृक्ष बनकर भारत ही नहीं, अपितु सम्पूर्ण विश्व में अपनी छाया फैला चुका है। जिसने 'विचार से विजय' अपनी 100 वर्षों की यशस्वी, अद्वितीय और प्रेरणादायक यात्रा को जन जन के बीच लोकप्रिय बना दिया है। आज जब संघ अपने 'परं वैभवं नेतुमेतत् स्वराष्ट्रम्' के पावन विचार के ध्येय मार्ग पर बढ़ रहा है तब यह अवसर है

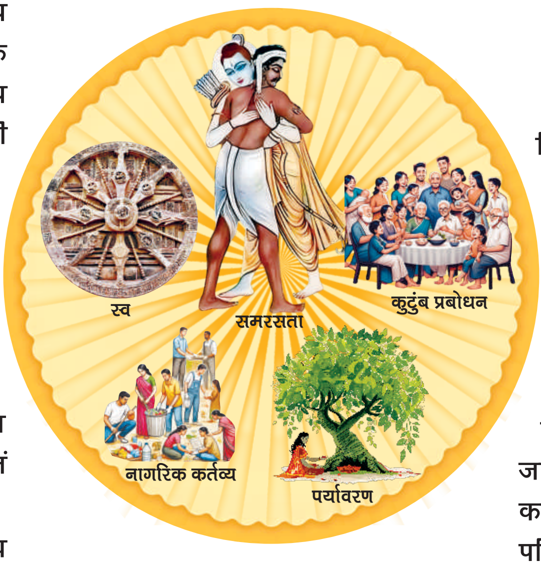

उसके विचार, संघर्ष, विकास और विजय की गौरवगाथा को आत्मसात करने का संघ का कार्य ही आचरण शुद्धि का है और राष्ट्र निर्माण के लिए व्यक्ति निर्माण का मंत्र लेकर पिछले 100 वर्ष से कार्य चल रहा है।

समाजव्यापी तथा सर्व समावेशी हिंदू संगठन का लक्ष्य लेकर यह ईश्वरीय अनुष्ठान अनेक बाधाओं को पार कर निरंतर गतिमान है। विजयादशमी युगाब्ध 5127 तदनुसार 2025 से संघ का शताब्दी वर्ष प्रारंभ हो गया है अपने स्वभाव के अनुसार ही इस अवसर पर कार्य विस्तार तथा दृढ़ीकरण के साथ ही समाज मन में अनुशासन सकारात्मक विमर्श प्रसार हेतु पंच परिवर्तन व्यवहार में उतारने का संकल्प परम पूजनीय सरसंचालक जी द्वारा सभी स्वयंसेवकों को दिया गया है।

पंच परिवर्तन के पांच आयाम हैं –

1. कुटुंब प्रबोधन
2. सामाजिक समरसता
3. पर्यावरण
4. नागरिक कर्तव्य
5. स्व का बोध

राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ का मानना है कि पंच परिवर्तन कार्यक्रम को सुचारू रूप से लागू कर समाज में बड़ा परिवर्तन लाया जा सकता है। स्व के बोध से नागरिक अपने कर्तव्यों के प्रति सजग होंगे। नागरिक कर्तव्य बोध अर्थात कानून की पालना से राष्ट्र समृद्ध व उन्नत होगा। सामाजिक समरसता व सद्भाव से ऊंच–नीच जाति भेद समाप्त होंगे। पर्यावरण से सृष्टि का संरक्षण होगा तथा कुटुम्ब प्रबोधन से परिवार बचेंगे और बच्चों में संस्कार बढ़ेंगे। समाज में बढ़ते एकल परिवार के चलन को रोक कर भारत की प्राचीन परिवार परंपरा को बढ़ावा देने की आज महती आवश्यकता है।

1-परिवार प्रबोधन : परिवार हमारे संस्कार की पाठशाला है। परिवार किसी भी व्यक्ति की शिक्षा का केंद्र बिंदु है। संघ का मानना है कि हमारा परिवार एक आदर्श परिवार हो जिससे कि हमारे

ISSN No. 2581-3528

पड़ोसी भी प्रेरित हों विश्व भी प्रेरित हो। संघ का संकल्प है कि पहले हम परिवार में प्रबोधन अपनाएंगे फिर 2026 तक अन्य परिवारों तक लेकर जायेंगे। रामायण, महाभारत सब आदर्श परिवारों की कहानी है और लोग उन्हें मानते भी हैं एक आदर्श परिवार कैसा होना चाहिए यह हमारे शास्त्रों में भी वर्णित है भीषण से भीषण स्थिति में भी अपने कर्तव्य और धर्म का पालन कैसे करें यह सब हमारे शास्त्रों में हमें देखने के लिए मिलता है। सम्पूर्ण विश्व के सामने मर्यादा पुरुषोत्तम श्रीराम का आदर्श, योगिराज श्री कृष्ण का आदर्श, धर्मराज युधिष्ठिर का आदर्श आदि सब देखने के लिए मिलता है। वर्तमान परिदृश्य में हम भारतीय तो पाश्चात्य परिवारों का अनुसरण कर रहे हैं जबकि पाश्चात्य देश भारतीय परिवारों को आदर्श मानते हुए अपने परिवार को भारतीय परिवार के अनुसार बदलते जा रहे हैं। अतः आज परिवार प्रबोधन समय की मांग है।

एक आदर्श में परिवार के सदस्य अपने परिवार के सभी सदस्यों की चिंता करने वाले हों। वह अपने समाज की, मानवता की और जब प्रश्न आएगा तब विश्व की चिंता करने वाला राष्ट्र समर्पित परिवार हो। इसके लिए सर्वप्रथम तो हमें अपने परिवार में स्वभाषा, स्वभूषा, स्वभवन स्वभ्रमण, स्वभजन और स्वभोजन यह छ बातें अपने परिवार में अपनानी चाहियें। अपने परिवार में मातृभाषा और राष्ट्रभाषा का आग्रह होना चाहिए। अपने पारंपरिक पोशाक का अभिमानपूर्वक समय पहनना चाहिए। अपने घर का वायुमंडल देशभक्ति का धार्मिक तथा सात्विक होना चाहिए। अपने कुल की उपासना पद्धति का नियम का पालन होना चाहिए। फास्ट फूड या जंक फूड से बचकर पौष्टिक, परंपरागत एवम घर में बने भोजन की आदत डालें। भ्रमण करते समय तीर्थ स्थान ऐतिहासिक और देशभक्ति पूर्ण स्थान का भी ध्यान रखें।

राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ का मानना है कि पंच परिवर्तन कार्यक्रम को सुचारू रूप से लागू कर समाज में बड़ा परिवर्तन लाया जा सकता है। स्व के बोध से नागरिक अपने कर्तव्यों के प्रति सजग होंगे। नागरिक कर्तव्य बोध अर्थात कानून की पालना से राष्ट्र समृद्ध व उन्नत होगा। सामाजिक समरसता व सद्भाव से ऊंच-नीच जाति भेद समाप्त होंगे। पर्यावरण से सृष्टि का संरक्षण होगा तथा कुटुम्ब प्रबोधन से परिवार बचेंगे और बच्चों में संस्कार बढ़ेंगे।

देवयज्ञ, पितृयज्ञ मनुष्ययज्ञ, भूतयज्ञ और ब्रह्मयज्ञ इन पांच यज्ञों को नए रूप में पुनर्जीवित करना होगा। सप्ताह में एक दिन तय करके सब लोगों को शाम को निश्चित रूप से इकट्ठा होना। एक साथ भोजन करना, श्रद्धापूर्वक भजन करना आनंद से घर में बना हुआ भोजन ग्रहण करना अपनी परंपरा और पूर्वजों के बारे में नई पीढ़ी को बताना तथा उनके प्रश्नों और जिज्ञासा के लिए भी समय देना। मितव्ययता के बारे में बच्चों को बताना। सामाजिक समरसता के लिए बच्चों को प्रेरित करना। पर्यावरण संरक्षण के लिए भी प्रेरित करना और परिवार प्रबोधन के द्वारा 'दिशि-दिशि फैला तमस हटेगा' 'भारत विश्व गुरु बनेगा' जैसे उद्देश्य की ओर बढ़ना हिंदू जगेगा तो विश्व जगेगा उद्देश्य को आत्मसात करना।

2. सामाजिक समरसता- सामाजिक समरसता को संघ की विचारधारा का केंद्रीय बिंदु माना गया है। संघ का मानना है कि हिंदू समाज की स्वाभाविक विशेषता समरसता रही है, लेकिन समय के साथ जाति-भेद, ऊँच-नीच और अस्पृश्यता जैसी विकृतियाँ उत्पन्न हुईं, जिससे समाज के कुछ वर्गों को अन्याय और अपमान सहना पड़ा।

इस बुराई को त्याज्य मानते हुए संघ का आग्रह है कि समाज में सब समान हैं-इस भावना से सभी को जोड़कर एकत्व (unity) की स्थापना की जाए।

जब हम सामाजिक समरसता शब्द का उच्चारण करते हैं तो हमारा सामना भारत की भाषाई विविधता या सांप्रदायिक विविधता से नहीं बल्कि जातीय असमानता से होता है। हमारे यहां न केवल अनेक जातियां हैं बल्कि जातिगत भेदभाव भी हैं। जो कि समाज के लिए हानिकारक है। जातिगत भेदभाव को मिटाने के लिए हमें सभी जाति के लोगों के लिए सद्भावना रखनी होगी तभी हम ऊंच-नीच भेदभाव भूलाकर शोषण मुक्त समता युक्त समाज का निर्माण कर सकते हैं। अतः सामाजिक समरसता का अनुपालन समय की आवश्यकता है।

3. पर्यावरण संरक्षण - पर्यावरण का हमारे जीवन में बहुत महत्वपूर्ण स्थान है इसके बिना मनुष्य एक क्षण भी जीवित नहीं रह सकता हरे-भरे पेड़ पौधे हमारे जीवन का भी वरदान है। प्रकृति के बिना मानव जीवन की कल्पना नहीं की जा सकती जल पृथ्वी वायु अग्नि आकाश इन पांच तत्वों से ही मनुष्य का जीवन है और जीवन के अंत में इन्हीं पंच तत्वों में विलीन होना पड़ता है। कहा भी गया है कि-

जल थल पावक गगन समीरा ।
पंचतत्व रचित यह अधम शरीरा।।

पर्यावरण प्रदूषण आज न केवल भारत की परंतु बल्कि संपूर्ण विश्व की एक गंभीर समस्या है। इसके लिए अपनी जीवन शैली पर्यावरण अनुकूल होनी चाहिए। हम भौतिक सुख के पीछे भागते हुए और आराम पाने के लिए अनजाने में प्रकृति का दोहन करते आ रहे हैं यदि हम अपने प्रयासों में जीवन शैली नहीं बदलेंगे तो गंभीर परिणाम भुगतने होंगे।

इसके लिए अधिक से अधिक पेड़ लगाएं। बच्चों के जन्मदिन पर पेड़ लगाने की परंपरा को शुरू करें और साथ ही

साथ उसके संरक्षण पर भी। प्लास्टिक से बनी चीजें का परहेज करें। जल का जितना कम से कम उपयोग हो उतना प्रयोग करें। प्राकृतिक संसाधनों का कम से कम प्रयोग करें।

पृथ्वी को माता मानकर पर्यावरण संरक्षण हेतु जीवनशैली में बदलाव करना और इसके लिए सामान्य जनमानस में विचार डालना हमको वेदों से प्राप्त शिक्षा के रूप में प्राप्त है। माता भूमि का मतलब है जन्म स्थान या अपना देश। भारतीय संस्कृति में जन्म भूमि को माता माना जाता है और उस पर बहुत सम्मान दिया जाता है। उक्त है– जननी जन्मभूमिश्च स्वर्गाऽदपि गरियसी। प्राचीन भारतीय ग्रंथों में भी भूमि को माता कहा गया है। वेद और पुराणों में भी पृथ्वी को माता का स्थान दिया गया है। अथर्ववेद के पृथ्वी सूक्त में कहा गया है, 'माता भूमिः पुत्रोऽहं पृथिव्याः' यानी धरती हमारी माता है और हम इसके पुत्र हैं। हिन्दू धर्म में भूमि को भूदेवी, धरणी, और वसुंधरा के नाम से भी जाना जाता है। हिन्दू धर्म शास्त्रों के मुताबिक, वास्तु देव भूमि के देवता हैं। प्रकृति की शुचिता और पवित्रता बनाए रखना हमारा संवैधानिक दायित्व है। संघ मत में ऐसा मानना है कि हम इसके संरक्षण हेतु कितने प्रकार से कार्य कर सकते हैं इसको ध्यान में रख कर आज शताब्दी वर्ष में कार्य करना और समाज को प्रेरणा देना है।

4. **स्वदेशी और आत्मनिर्भरता** - स्वदेशी का मतलब विदेशी सामान इस्तेमाल न करना भर नहीं है विनोबा जी कहते हैं कि स्वदेशी का अर्थ है आत्मनिर्भरता और अहिंसा। संघ ने इसमें एक शब्द जोड़ी है वह है सादगी। संघ का एक और मत है कि जीवन में मितव्ययिता को अपनाए अर्थात् जितना जरूरी हो उतना ही सामान खरीदे। प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी ने 15 अगस्त 2020 को लाल किले की प्राचीर से राष्ट्र को संबोधित करते हुए आत्मनिर्भर भारत पर जोर दिया और कहा कि आत्मनिर्भर भारत शब्द नहीं, 130 करोड़ देशवासियों के लिए मंत्र है। प्रधानमंत्री ने कहा कि आत्मनिर्भर भारत का आशय केवल आयात कम करना ही नहीं, हमारी क्षमता, रचनात्मकता और कौशल को भी बढ़ाना हैं। हमें मेक इन इण्डिया के साथ साथ मेक फॉर वर्ल्ड की व्यापक संकल्पना के साथ आगे बढ़ना होगा। भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन में स्वदेशी की सोच ने ही स्वराज का मार्ग प्रशस्त किया। स्वदेशी केवल कुछ क्षेत्रों तक ही सीमित नहीं रहा यह आत्मनिर्भरता और स्वावलम्बन का सूचक बन गया। स्वदेश से तात्पर्य स्वदेशी वस्तुओं, स्वदेशी सरकार तथा स्वदेशी व्यवस्था की स्थापना से था। इसे ही आज संघ पुनः मंत्र रूप में लेकर स्वदेशी जागरण मंच के माध्यम से जन जन तक पहुँचने को संकल्पित है। आज की आवश्यकता अनुसार लोकल को वोकल करने की बात को कह रहा है। स्वामी विवेकानन्द ने विदेशों में भारतीय संस्कृति की महानता को, धर्म के विदेशी स्वरूप को स्पष्ट और तार्किक रूप में रखा। जिससे कि भारतीयों में अपने देश व संस्कृति को लेकर एक आत्मनिर्भरता की भावना विकसित और समद्ध हुई। आज पुनः समाज को उसी दिशा की तरफ उन्मुख करने का प्रयत्न है ।

5. **नागरिक कर्तव्य** - लोकतंत्र की सफलता और स्थिरता नागरिकों की भागीदारी और कर्तव्य के प्रति सजगता पर निर्भर करती है। जब नागरिक अपने कर्तव्य के प्रति संवेदनशील होते हैं और उसकी इमानदारी से पालन करते हैं तो समाज में सकारात्मक बदलाव आते हैं और देश की प्रगति होती है समाज की प्रगति सुरक्षा और समृद्धि के लिए नागरिक को कर्तव्य के प्रति संवेदनशील तथा कटिबद्धता आवश्यक है। नागरिकों के मौलिक कर्तव्य–

1. संविधान का पालन करना उसके आदर्श और संस्थानों, राष्ट्रीय ध्वज और राष्ट्रगान का सम्मान करना।
2. हमारे राष्ट्रीय संग्राम को प्रेरित करने वाले उच्च आदर्शों को विकसित करना और उनका पालन करना।
3. भारत की संप्रभुता, एकता अखंडता का संरक्षण करना।
4. देश की रक्षा और आह्वान किया जाने पर राष्ट्रीय सेवा करना।
5. धर्म, भाषा क्षेत्र वर्ग के मतभेदों को दूर करना तथा भारत के लोगों के बीच एकता और भाईचारे को बढ़ावा देना।
6. महिलाओं की गरिमा को कम करने वाली प्रथाओं को त्यागना हमारी विविधता पूर्ण सांस्कृतिक विरासत का संरक्षण करना।
7. अनुशासन बनाए रखना व नियमों का पालन करना।

प्रत्येक नागरिक का धर्म है कि सामाजिक कर्तव्यों का निर्वहन करे और राष्ट्रहित में योगदान दें। नागरिक कर्तव्य, एक समृद्ध और लोकतांत्रिक समाज में रहने के लिए आवश्यक तत्त्व होते हैं। ये कर्तव्य, नागरिकों की ज़िम्मेदारियां और अधिकार होते हैं। नागरिक कर्तव्यों को पूरा करना एक प्रकार से सरकार और जनमानस के बीच होने वाले अनुबंध का सम्मान होता है। आज के संदर्भ में संवैधानिकता कर्तव्यों को निम्न बिंदुओं के रूप में देखा जाता है, जिसके अनुपालन हेतु ही संघ का ऐसा आग्रह है।

राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ द्वारा बताए गए उपर्युक्त पंच परिवर्तन जीवन पांच सूत्र हैं जो समाज में अनुशासन वो सकारात्मक परिवर्तन लाने के लिए अति आवश्यक है। इसके लिए आवश्यक है कि पहले अपने व्यवहार में परिवर्तन लाएं फिर अपने परिवार में और फिर अपने समाज में परिवर्तन लाने का प्रयास करें। पंच परिवर्तन से ही एक सुसंस्कृत परिवार, समृद्ध समाज एवं समुन्नत राष्ट्र का निर्माण संभव है।

ISSN No. 2581-3528

पंच परिवर्तन के पुरोधा दत्तोपन्त ठेंगड़ी

डॉ. शिवा शर्मा
असिस्टेंट प्रोफेसर - अंग्रेजी विभाग
झम्मन लाल पी.जी. कॉलेज, हसनपुर, अमरोहा

ऋषि श्रद्धेय श्री दत्तोपंत जी ठेंगड़ी का जन्म 10 नवम्बर, 1920 को, दीपावली के दिन, महाराष्ट्र के वर्धा जिला के आर्वी नामक ग्राम में हुआ। दत्तोपंत जी के पित्ताजी श्री बापूराव दाजीबा ठेंगड़ी, सुप्रसिद्ध अधिवक्ता थे, तथा माताजी, श्रीमति जानकी देवी, गंभीर आध्यात्मिक अभिरुचि से सम्पन्न, साक्षात करूणामूर्ति, और भगवान दतात्रेय की परम भक्त थीं। परिवार में एक छोटा भाई और एक छोटी बहन थीं।

श्रद्धेय दत्तोपंत जी की 11वीं तक की शिक्षा, आर्वी म्युनिसिपल हाई स्कूल में सम्पन्न हुई। बाल्यकाल से ही, उनकी मेधावी प्रतिभा तथा नेतृत्व क्षमता की चर्चा सब ओर थी। 15 वर्ष की अल्पायु में ही, आप आर्वी तालुका की ''वानर सेना'' के अध्यक्ष बने। अगले वर्ष, म्युनिशिपल हाई स्कूल आर्वी के छात्र संघ के अध्यक्ष चुने गये। आपने बाल्यकाल से ही अपने आप को संघ के साथ जोड़ लिया था और आपने अपने एक सहपाठी और मुख्य शिक्षक श्री मोरोपंत जी पिंगले के सानिध्य में राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के संघ शिक्षा वर्गों का तृतीय वर्ष तक का प्रशिक्षण कार्य पूर्ण कर लिया।

1936 में, नागपुर के ''मौरिस कॉलेज'' में दाखिला लेकर अपनी स्नातक की पढाई पूरी की और फिर, नागपुर के लॉ कॉलेज से, एल. एल. बी. की उपाधि प्राप्त की। मौरिस कॉलेज में अध्ययन के दौरान, आप सन् 1936–38 तक क्रान्तिकारी संगठन ''हिन्दुस्तान सोशलिस्ट रिपब्लिकन एसोसिएशन'' से सम्बन्ध रहे। श्रद्धेय दत्तोपंत जी ठेंगड़ी अपने बाल्यकाल से हीं, संघ शाखा में जाया करते थे। हालांकि वह अनियमित स्वयंसेवक थे।

1936 से नागपुर में अध्यनरत रहने तथा माननीय मोरोपंत जी के सानिध्य के कारण दत्तोपंत जी को परम पूजनीय डॉक्टर जी को प्रत्यक्ष देखने, सुनने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। आगे चलकर परम पूजनीय श्री गुरूजी का अगाध स्नेह और सतत् मार्गदर्शन प्राप्त करने का सौभाग्य प्राप्त हुआ।

दिनांक 22 मार्च 1942 को संघ के प्रचारक का चुनौती भरा दायित्व स्वीकार कर आप सुदूर केरल प्रान्त में संघ का विस्तार करने के लिए ''कालीकट'' पहुंचे। 1942 से 1945 तक रा. स्व. संघ प्रचारक के नाते यशस्वी कार्य खड़ा करने के साथ ही, 1945 से 1947 तक, कलकत्ता में, संघ के प्रचारक के नाते, तथा 1948 से 49 तक बंगाल और असम प्रान्त के प्रान्त प्रचारक का दायित्व निभाया। श्री दत्तोपंत जी बचपन में ही संघ के साथ जुड़ गए थे अतः आपके व्यक्तित्व में राष्ट्रीयता की भावना स्पष्ट रूप से झलकतीं थीं। आपके व्यक्तित्व का चित्रण करते हुए श्री भानुप्रताप शुक्ल जी लिखते हैं कि "रहन–सहन की सरलता, अध्ययन की व्यापकता, चिन्तन की गहराई, ध्येय के प्रति समर्पण, लक्ष्य की स्पष्टता, साधना का सातत्य और कार्य की सफलता का विश्वास, श्री दत्तोपंत ठेंगड़ी का व्यक्तित्व रूपायित करते हैं।"

1950 के दशक में, दुनिया का एक–तिहाई हिस्सा साम्यवादी विचारधारा से ग्रस्त था। उस समय भारत में एक प्रसिद्ध नारा था, 'लाल किले पर लाल निशान, माँग रहा है हिंदुस्तान'। उस समय भारत के मजदूर आंदोलन में वामपंथी विचारधारा का बोलबाला था। इसी दौर में दत्तोपंत ठेंगड़ी ने भारत के मजदूर और किसान आंदोलनों में सफलतापूर्वक पैठ बनाई और 1955 में भारतीय मजदूर संघ (बीएमएस) की स्थापना की। आज, बीएमएस दुनिया का एक अग्रणी मजदूर संगठन है और अंतर्राष्ट्रीय श्रम संगठन जैसी संस्थाओं में देश का प्रतिनिधित्व करता है।

1964 से 1976 तक दो बार वे राज्यसभा के सदस्य रहे। राज्यसभा में अपने कार्यकाल के दौरान, उन्होंने विभिन्न समितियों में कार्य किया और कई प्रमुख नेताओं के साथ संबंध बनाए, जिससे उन्हें आपातकाल विरोधी आंदोलन में मदद मिली।

1975 के आपातकाल के दौरान, उन्होंने 'लोक संघर्ष समिति' के सचिव के रूप में तानाशाही विरोधी आंदोलन का संचालन किया। बाबा साहेब अम्बेडकर जन्म शताब्दी के अवसर पर पुणे में, दिनांक 14 अप्रैल 1983 को सामाजिक समरसता मंच की स्थापना की। यह सुखद संयोग था कि इसी दिन प. पू. डॉक्टर जी का जन्मदिन वर्ष प्रतिपदा भी था। ''सामाजिक समरसता के बिना सामाजिक समता असंभव है।'' इस ध्येय वाक्य का उद्घोष कर, श्रद्धेय दत्तोपंत जी ने, हिन्दू समाज की अत्यन्त पीड़ादयक व्याधि के उपचार का मार्ग प्रशस्त किया।

एक लेखक के रूप में, उन्होंने 80 से ज्यादा किताबें और पुस्तिकाएँ लिखीं, जिनमें से ज्यादातर मजदूरों और दलितों की कठिनाइयों से जुड़ी थीं। उनकी किताबों में लेबर पॉलिसी, कार्यकर्ता, डेस्टिनेशन, फोकस, द हिंदू व्यू ऑफ आर्ट्स, द पर्सपेक्टिव, अवर नेशनल रेनेसां, थर्ड वे, अंबेडकर और सोशल रेवोल्यूशन शामिल हैं।

उन्होंने 2002 में पद्म भूषण पुरस्कार को यह कहकर अस्वीकार कर दिया कि जब तक आरएसएस के संस्थापक डॉ. हेडगेवार और श्री गुरुजी को भारत रत्न नहीं मिलता, तब तक वह कोई सम्मान स्वीकार नहीं करेंगे। 14 अक्टूबर 2004 को उनका निधन हो गया। ■

ISSN No. 2581-3528

पंच परिवर्तन की कार्यशाला एवं प्रयोगशाला है हमारे शैक्षिक संस्थान

प्रस्तुत है 'पंच परिवर्तन को व्यवहार में लाने हेतु शैक्षिक संस्थानों की भूमिका' विषय पर केशव संवाद पत्रिका की कार्यकारी संपादक डॉ. नीलम कुमारी द्वारा शिक्षा संस्कृति उत्थान न्यास के प्रान्तीय अभ्यास वर्ग में क्षेत्रीय संयोजक मा. श्री जगराम सिंह जी के सानिध्य में दिए गए उदबोधन के मुख्य अंश-

डॉ. दीपा त्यागी
एसोसिएट प्रोफेसर, अंग्रेजी विभागाध्यक्ष
जेएसएस तकनीकी शिक्षा अकादमी, नोएडा

ज्ञान भूमि से अलंकृत भारतवर्ष ने सहस्त्रों वर्षों तक विश्व का सांस्कृतिक नेतृत्व किया है और सर्वे भवंतु सुखिनः एवं वसुधैव कुटुम्बकम् के पावन विचार के द्वारा विश्व कल्याण का मार्ग भी प्रशस्त किया है। आज जब भारत विकसित भारत की ओर बढ़ चला है तब सांस्कृतिक चेतना के पुनर्जागरण के इस काल में राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के माननीय सरसंघचालक परम पूज्य श्री मोहन भागवत जी ने विवेकानंद जी के उद्घोष 'वेद सभी धर्मों का मूल है' एवं महर्षि दयानंद सरस्वती के उद्घोष 'वेदों की ओर लौटो' को अंगीकार करते हुए भारत के सामाजिक व सांस्कृतिक पुनर्जागरण के लिए पंच परिवर्तन का आह्वान किया है। वर्तमान परिदृश्य में जहां एक और संपूर्ण विश्व रूस यूक्रेन जैसी भयावह स्थिति देख चुका है और नेपाल में अशांति के प्रदर्शन से भी हम भलीभांति परिचित हैं और भारत में भी हिंदू मुस्लिम देंगे भारत के लिए घातक बने हुए हैं, ऐसे में समाज में अनुशासन एवं सकारात्मक परिवर्तन लाने के लिए पंच परिवर्तन और भी महत्वपूर्ण हो जाते हैं।

पंच परिवर्तन न केवल भारत के लिए बल्कि संपूर्ण विश्व के कल्याण के लिए अति आवश्यक है।

परम आदरणीय सरसंघचालक जी ने पंच परिवर्तन के महत्व पर प्रकाश डालते हुए कहा है कि 'पंच परिवर्तन समाज के आचरण में आमूलचूल परिवर्तन लाने वाली बाते है'।

पंच परिवर्तन के पांच आयाम है ...

1.कुटुम्ब प्रबोधन, 2.सामाजिक समरसता, 3. स्व का बोध, 4.पर्यावरण 5 नागरिक कर्तव्य

कुटुम्ब प्रबोधन : परिवार व्यक्ति की प्रथम पाठशाला है व प्रथम संस्कारशाला है। किसी समय में भारत के परिवार संपूर्ण विश्व के लिए आदर्श हुआ करते थे। परन्तु विडम्बना देखिए कि संपूर्ण विश्व को वसुधैव कुटुम्बकम् का संदेश देने वाले भारत के आज विघटन की कगार पर हैं ऐसे में भारतीय सभ्यता वो संस्कृति के संरक्षण, हस्तांतरण एवं मूल्यों के संवर्द्धन के लिए परिवार प्रबोधन नितान्त आवश्यक है।

अपने परिवार में कुटुंब प्रबोधन करने के लिए माननीय सरसंघचालक जी ने कहा है कि परिवार के सभी सदस्यों का आपस में मंगल संवाद होना चाहिए। ऐसा हमारे घर में माताएं बहनें, बड़े बुजुर्ग बच्चे सब साथ करेंगे तो अपना एक घर खड़ा होगा पड़ोसी भी उसका अनुसरण करेंगे। सभी को बुलाकर दिखाएंगे कि कुटुंब का वातावरण कैसा होना चाहिए पहले हम करेंगे फिर 26 की विजयदशमी तक समाज में लेकर जाएंगे ।

शैक्षिक संस्थानों में परिवार प्रबोधन : हमारा परिवार केवल हमारे माता-पिता और बुजुर्गों से मिलकर ही नहीं बनता है बल्कि शैक्षिक संस्थान जहां पर हम कार्य करते हैं वह भी हमारे परिवार का ही एक हिस्सा है। परिवार प्रबोधन के लिए आवश्यक है प्रेम, स्नेह, संबंध, सहयोग और समर्पण यही सब बातें हमें शिक्षण संस्थानों में भी प्रयोग करनी चाहिए।

यह भी सत्य है कि व्यक्ति के समाजीकरण का एवं चरित्र निर्माण व्यक्तित्व के समग्र विकास का बहुत बड़ा माध्यम हमारे शिक्षण संस्थान ही हैं जिस प्रकार से मंगल संवाद करने से हमारा कुटुंब प्रबोधन होता है उसी प्रकार शैक्षिक संस्थानों में भी हम आपस में मंगल संवाद करके विभिन्न प्रकार की समस्याओं से छुटकारा पा सकते हैं।

ISSN No. 2581-3528

करणीय कार्य -

1. हमारे शैक्षिक संस्थानों में अकादमिक व शैक्षिक वातावरण बनाने के साथ–साथ पारिवारिक वातावरण भी बने जिससे सभी शिक्षक साथी आपस में मिल जुलकर अपने कार्य को दिशा दे सकें।

2. शैक्षिक संस्थानों में अपने शिक्षक साथी कर्मचारी एवं विद्यार्थियों के सुख दुख में अवश्य सम्मिलित हों और विद्यार्थियों को भी शिक्षण संस्थानों में परिवार जैसा महसूस कराएं।

3. जिस प्रकार हम परिवार प्रबोधन में सप्ताह में कम से कम एक बार साथ बैठकर भोजन करते हैं इसी प्रकार से हम अपने शैक्षिक संस्थानों में भी हम एक साथ बैठकर एक सप्ताह में एक बार भोजन अवश्य करें और एक दूसरे से अपनी बातें साझा करें।

4. शैक्षिक संस्थानों में अगर कोई जरूरतमंद साथी है तो उसकी भी सहायता करें। इस प्रकार से शैक्षिक संस्थानों में हम परिवार जैसा वातावरण बना सकते हैं।

सामाजिक समरसता : संघ का मानना है कि सब भाषा, भाषी, मत, प्रांत व संप्रदाय के लोग हमारे कुटुंब हैं हमारे मित्र है मंदिर, पानी, शमशान सब हिंदुओं का एक है। अतः जाति धर्म या संप्रदाय के आधार पर कोई भेदभाव नहीं होना चाहिए।

करणीय कार्य :

1. शिक्षण संस्थानों में किसी जाति, वर्ग, वर्ण, या संप्रदाय के आधार पर किसी भी शिक्षक या विद्यार्थी के साथ भेदभाव नहीं करना चाहिए।

2. वैसे तो शिक्षक के लिए सभी छात्र–छात्राएं समान होते हैं लेकिन फिर भी अगर कहीं जाति का विषय आए तो उसे त्याग कर सभी के लिए सद्भावना का भाव होना चाहिए।

3. प्राचार्य और प्रबंध तंत्र को सभी शिक्षकों के प्रति सद्भावना का भाव अपने मन में रखना चाहिए अर्थात विश्वविद्यालय अथवा महाविद्यालय में किसी अमुक जाति के लोगों को सारी सुविधाएं उपलब्ध न कराकर सभी के लिए समान संसाधन और सुविधाएं उपलब्ध कराने का प्रयास किया जाना चाहिए।

स्व का बोध : अपनी सभ्यता एवं संस्कृति व संस्कारों का बोध होना ही स्व का आत्मबोध है। स्व के भाव को जागृत करने का तात्पर्य है स्वदेशी को अपनाना भारत को आत्मनिर्भर देश बनते हुए देखना।

करणीय कार्य-

1. अपने देश, अपनी मातृभूमि और अपनी भाषा पर गर्व की अनुभूति होनी चाहिए। इसके लिए स्वभाषा, स्वभूषा, स्वभजन, स्वभवन, स्वभ्रमण स्व भोजन अपनाना होगा।

2. अपनी मातृभाषा या फिर राष्ट्रभाषा में हस्ताक्षर करना चाहिए।

3. इंडिया के स्थान पर भारत शब्द का प्रयोग करना चाहिए तथा शोध पत्र में भी इसको बढ़ावा देना चाहिए।

4. कौशल युक्त शिक्षा प्रदान करना चाहिए उदाहरण के लिए राष्ट्रीय शिक्षा नीति द्वारा स्किल डेवलपमेंट कोर्स वोकेशनल प्रोग्राम हम चलाते ही हैं।

5.योग की शिक्षा को अनिवार्य अंग बनाकर हम योग को बढ़ावा दे सकते हैं।

पर्यावरण : पर्यावरण बड़ा महत्वपूर्ण विषय है। पर्यावरण के बिना हम एक क्षण भी नहीं रह सकते। परन्तु हमने भोग विलासिता के कारण अनावश्य रूप से प्रकृति का दोहन शुरू कर दिया। जिसके कारण हमें प्राकृतिक आपदा, बाढ़, भूस्खलन, असमय बरसात व पर्यावरण प्रदूषण जैसी गंभीर चुनौतियों का सामना करना पड़ रहा है। इसलिए पर्यावरण संरक्षण आज समय की मांग है।

करणीय कार्य -

प्रकृति जिसे हम अपनी धरती माता कहते हैं उसके प्रति सम्मान एवं संवेदनशीलता को बढ़ाना होगा उसके लिए–

1. पानी बचाओ, प्लास्टिक हटाओ, वृक्ष लगाओ इन तीन बातों की और संघ ने विशेष बल दिया है।

2. छात्रों को जल संरक्षण वृक्षारोपण के लिए प्रेरित करना होगा।

3. स्वच्छता में ऊर्जा बचत के प्रति संवेदनशील बनाना होगा।

4. ग्रीन स्कूल या पर्यावरण मित्र विद्यालय की संकल्पना को अपनाना होगा।

5. प्लास्टिक मुक्त परिसर और रीसाइकलिंग की आदत डालना होगा।

नागरिक कर्तव्य : संविधान भारत की आत्मा है। नागरिक कर्तव्य की अगर कोई सच्ची पाठशाला हो सकती है तो वह केवल हमारे शैक्षिक संस्थान ही हो सकते हैं।

करणीय कार्य -

1. संविधान की प्रस्तावना को कॉलेज के कॉरिडोर में जगह जगह पर लगाना चाहिए तथा साथ ही साथ समय समय पर उसका वाचन भी होना चाहिए। ताकि छात्रों को अधिकारों के साथ–साथ कर्तव्यों का पाठ भी पढ़ाया जा सके।

2. राष्ट्रीय सेवा योजना स्काउट गाइड और राष्ट्रीय क्रेडिट कोर के माध्यम से रोड सेफ्टी प्रोग्राम, जागरूकता रैली निकलना चाहिए। उदाहरण के लिए टू व्हीलर पर हेलमेट का प्रयोग, टू व्हीलर पर केवल दो ही व्यक्ति का चलन। फॉरव्हीकल आदि में सीटबेल्ट लगना आदि। आदि विषय को लेकर जागरूकता रैली के माध्यम से न केवल छात्र–छात्राओं में बल्कि आम नागरिकों में भी अनुशासन और नियमों के पालन को प्रेरित करना।

3. संविधान का सम्मान करें सम्मान में निहित अधिकारों के साथ–साथ कर्तव्यों का भी पालन करें। इसके अतिरिक्त नियमों का पालन करना, सूचनाओं का पालन करना, समय का पालन करना और अनुशासन यह सभी नागरिक कर्तव्य के अंतर्गत आते हैं जिनका पालन करना सभी के लिए नितान्त आवश्यक है।

इस प्रकार हम पंच परिवर्तन को अपने व्यवहार में लाकर छोटे–छोटे परिवर्तन कर समाज में बड़ा परिवर्तन कर सकते हैं। लेकिन सर्वप्रथम पंच परिवर्तन को हमें अपने व्यवहार में लाना होगा। ■

ISSN No. 2581-3528

राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के 100 साल

मानस वर्मा
सहायक प्रोफेसर, दिल्ली विश्वविद्यालय

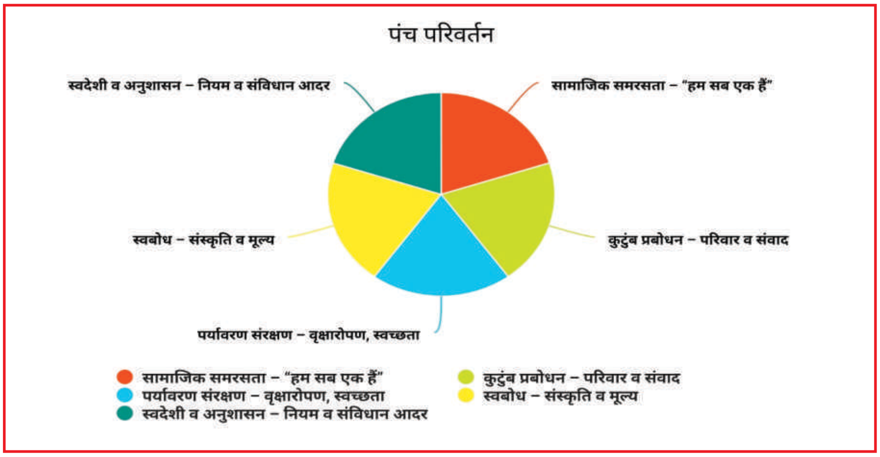

"नमस्ते सदा वत्सले मातृभूमे,
त्वया हिन्दूभूमि सुखवं वर्धितोऽहम्..."

भारतभूमि की संताने जब शाखा में यह प्रार्थना करती हैं, तो उसके हृदय में केवल भावनात्मक जुड़ाव नहीं, बल्कि जीवन का संकल्प भी निहित होता है। राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ (आरएसएस) की स्थापना 1925 में डॉ. केशवराव बलिराम हेडगेवार जी ने की थीं। तब से लेकर आज शताब्दी वर्ष 2025 तक संघ ने एक ऐसी यात्रा तय की है जिसमें संघर्ष, सेवा और संगठन शक्ति की अद्वितीय मिसाल देखने को मिलती है।

संघ ने अपने 100 वर्षों की यात्रा पूरी करते हुए यह सुनिश्चित किया है कि व्यक्ति निर्माण से समाज निर्माण और समाज निर्माण से राष्ट्र निर्माण हो। शताब्दी वर्ष में विशेष पंच परिवर्तन कार्यक्रम घोषित किया गया है–

संघ का विश्वास है कि जब स्वयंसेवक इन विषयों को अपने जीवन का हिस्सा बनाएँगे तो समाज उनके अनुकरण से स्वतः बदलता चला जाएगा।

संघ की ऐतिहासिक यात्रा और प्रमुख पड़ाव–

1925 : नागपुर में स्थापना। कुछ दर्जन स्वयंसेवकों से शुरुआत – आज 83,000 से अधिक शाखाएँ सक्रिय। पिछले 15 वर्षों में शाखाओं की संख्या लगभग दोगुनी। हर वर्ष लाखों युवक शाखाओं से जुड़ रहे हैं।

1947 – विभाजन के समय 3,000 राहत शिविर।

1962 – चीन युद्ध में सेना और सरकार को सहयोग।

1975 – आपातकाल में हजारों स्वयंसेवक जेल गए।

1984 – सिख दंगों के समय सिख परिवारों की रक्षा।

1992 – अयोध्या आंदोलन और कारसेवा।2004 – सुनामी पीड़ितों के लिए बड़े स्तर पर राहत कार्य।

2020 – कोविड–19 महामारी में करोड़ों लोगों को भोजन, दवाएँ और मास्क उपलब्ध कराए।

2024 – राम मंदिर का निर्माण, एक शताब्दी लंबा सांस्कृतिक संकल्प पूरा।

संघ का मूल सिद्धांत रहा है कि "व्यक्ति निर्माण से राष्ट्र निर्माण" हो। शाखाओं के माध्यम से अनुशासन, सेवा और राष्ट्रभक्ति का संस्कार और शाखाओं में प्रार्थना, भारत के राजनीतिक–सामाजिक जीवन में जनचेतना और योग का प्रवाह, खेल, शिक्षा, स्वास्थ्य,

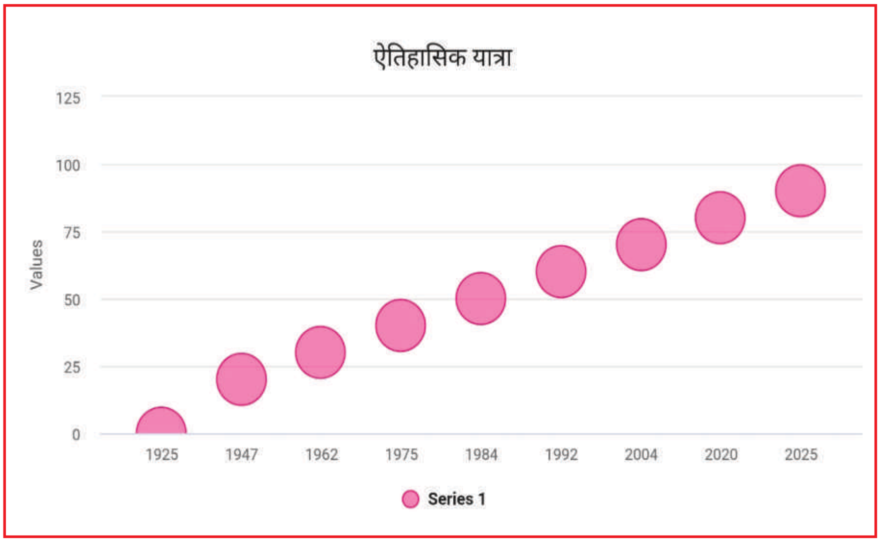

ISSN No. 2581-3528

ग्रामीण विकास, समाज के हर वर्ग– दलित, आदिवासी, ग्रामीण और शहरी–से जुड़ाव, गीत, और विचार–विमर्श के माध्यम से युवाओं को अनुशासित और संगठित नागरिक बनाया जाता है। यह केवल व्यायामशाला नहीं, बल्कि एक चरित्र निर्माण केंद्र है।

आज संघ युवाओं के लिए प्रेरणा बन गया है। आज युवा भौतिकता की दौड़, सांस्कृतिक संकट और सामाजिक विघटन के बीच खड़ा है। उसे चाहिए एक ऐसा मंच, जो उसके भीतर अनुशासन, सेवा और नेतृत्व की भावना जगाए। संघ की शाखाएँ युवाओं को यह सब प्रदान करती हैं–

– समय का महत्व और अनुशासन।

– छोटे कार्यों से नेतृत्व क्षमता।

– सेवा भाव और संकट में समाज के साथ खड़े रहने का संस्कार।

– जाति, वर्ग और क्षेत्र से ऊपर उठकर “एक भारत” की चेतना।

निष्कर्ष: राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के शताब्दी वर्ष में यह कहना अतिशयोक्ति नहीं कि यह संगठन केवल एक संस्था नहीं, बल्कि राष्ट्रजीवन का धड़कता हुआ हृदय बन चुका है। पंच परिवर्तन कार्यक्रम यह सुनिश्चित करेगा कि आने वाले समय में समाज अधिक समरस, संस्कारयुक्त और आत्मविश्वासी बने। युवाओं को चाहिए कि वे इस राष्ट्र यात्रा में भागीदार बनें, शाखाओं से जुड़ें रहे और जीवन को अनुशासन, सेवा और राष्ट्रभक्ति का पर्याय बनाएं। क्योंकि–

“व्यक्ति बदलता है तो परिवार बदलता है,
परिवार बदलता है तो समाज बदलता है,
और जब समाज बदलता है तो राष्ट्र बदलता है।”

राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के शताब्दी वर्ष में यह संगठन व्यक्ति निर्माण से लेकर राष्ट्र निर्माण तक की यात्रा पर है। संघ ने संघर्ष, सेवा और संगठन के माध्यम से समाज में समरसता, संस्कार, और राष्ट्रभक्ति का संदेश दिया है। शाखाएँ युवाओं को अनुशासन, सेवा और नेतृत्व की भावना से प्रेरित करती हैं। ‘व्यक्ति बदलता है तो राष्ट्र बदलता है’ - संघ का यही मंत्र समाज और राष्ट्र की दिशा तय करता है।

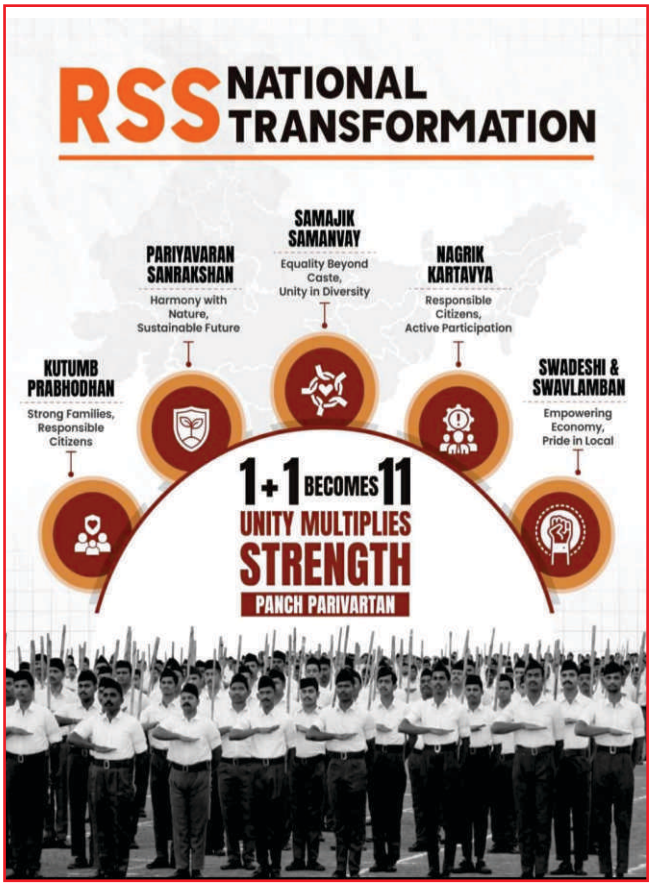

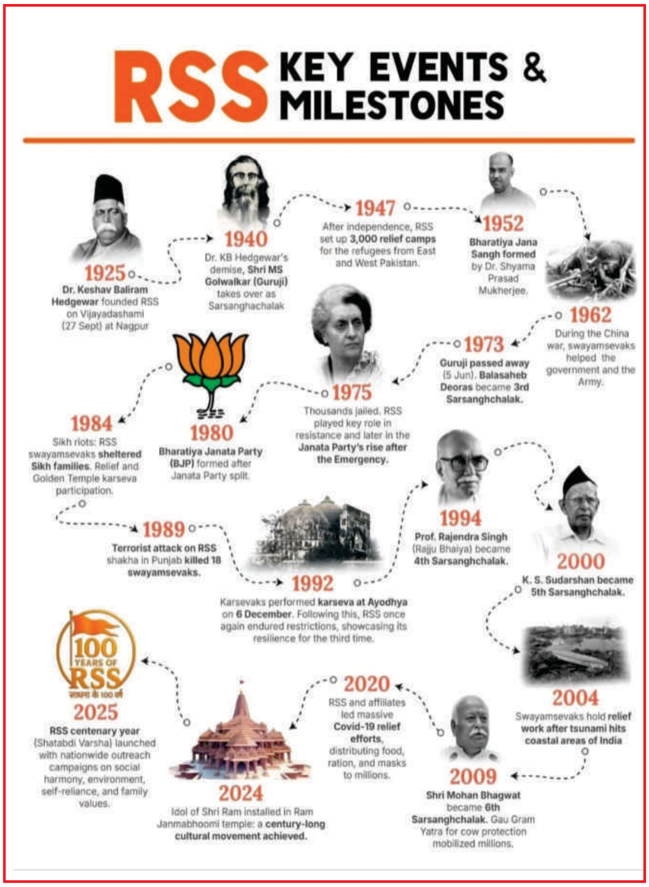

ISSN No. 2581-3528

समरसता का प्रतीक है विजयादशमी पर्व

डॉ. दीपा रानी
असिस्टेंट प्रोफेसर, दिल्ली विश्वविद्यालय

समरसता किसी भी देश के सामाजिक विकास, राष्ट्रीय एकता और अखंडता के लिये प्रतिबद्धता की गारंटी है। आज भारतीय समाज के सामने जो चुनौतियाँ हैं उनका सामना करने की कुंजी का नाम है समरसता, अगर यूँ कहें तो गलत नहीं होगा कि समाज में दबे कुचले वंचित वर्ग को न्याय दिलाना तथा सभी में समानता सुनिश्चित करना ही सामाजिक समरसता की सही परिभाषा है। हमारे देश के कई त्योहार इसे बनाये रखने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। इस परिपेक्ष्य में देखें तो हिंदुओं का सबसे महत्वपूर्ण त्योहार जो आश्विन महीने के दसवें और नवरात्रि के समापन के बाद मनाया जाता है जो भारत में विजयादशमी के रूप में प्रचलित है। यह पर्व समरसता का सबसे बड़ा प्रतीक है। हिन्दू धर्म की मान्यता है कि यह त्योहार बुराई पर अच्छाई की जीत के उत्सव का अनूठा उदाहरण है। भारत के विभिन्न क्षेत्रों में जैसे दक्षिणी पूर्वी और उत्तरी पूर्वी राज्यों में विजयादशमी और दुर्गा पूजा बुराई के अंत और सामाजिक समरसता को कायम करने का प्रतीक है। कहा जाता है धर्म और सद्भाव को स्थापित करने के लिए देवी माँ दुर्गा ने महिषासुर का संघार किया था। वहीं भारत के उत्तरी और पश्चिमी राज्यों में रामचंद्र भगवान द्वारा रावण की बुराइयों के अंत के लिए इस त्योहार को मनाया जाता है। भारतीय रिसर्च और पर्याप्त स्रोतों के अनुसार महर्षि वाल्मीकि द्वारा निर्मित रामायण जिसको विश्व का प्रथम महाकाव्य माना गया है यह विश्व को त्याग, प्रेम के प्रति समर्पण, मर्यादा, सत्य, प्रेम ,धर्म, भातृत्व और समरसता के मूल्यों को सिखाता है। भारतीय साहित्यों में वसुधैव कुटुंबकम् सदा से ही प्रेरणादायी रहा है। रामचरित मानस और रामायण दोनों महाकाव्यों में ऊंच–नीच, भेदभाव, छुआछूत को महत्व न देकर सामाजिक समरसता को प्रेरणादायक बताया गया है। भगवान श्री राम को जब 14 वर्ष का वनवास हुआ तो उन्होंने वन में रहने के दौरान भिन्न–भिन्न लोगों से मित्रता कर उन्हें गले लगाया तथा समाज को समरसता का पाठ पढ़ाया। उनका कहना था भले ही मनुष्य का रंगरूप, आकार अलग हो सकता है पर सभी मनुष्य के अन्दर एक ही आत्मा का निवास है। आज इस बटे हुए समाज में केवट, जिसे वंचित समुदाय की श्रेणी में माना जाता है। भगवान राम ने केवट को गले लगाकर समाज के सामने सामाजिक समरसता का अभूतपूर्व उदाहरण प्रस्तुत किया। कहते हैं राम सभी को स्वयं में आत्मसात कर लेते थे। राम भगवान ने सबरी के जूठे बेर खाकर समाज को यह संदेश देने की कोशिश की कि कोई बड़ा–छोटा, ऊंच–नीच नहीं है। सभी एक समान हैं। लेकिन आज के परिपेक्ष्य में अगर हम देखें तो पाएंगे हमारा हिंदू समाज भिन्न–भिन्न जातियों, वर्णों, समूहों, अमीरी–गरीबी, भाषावाद, क्षेत्रवाद जैसे कई अलग–अलग समूहों में

ISSN No. 2581-3528

बटा है। हालाँकि अलग-अलग समय पर हमारे कई महापुरुष जैसे भीमराव आंबेडकर, गाँधी जी, स्वामी विवेकानंद, बाल गंगाधर तिलक, वीर सावरकर, डॉ हेडगेवार, सदाशिव गोलवलकर अर्थात् गुरु जी, दयानंद सरस्वती, डॉ राम मनोहर लोहिया, ज्योतिबा राव फुले जैसे कई महापुरुषों ने जाति-पाति खत्म करने एवं सामाजिक समरसता को मजबूत करने में महत्वपूर्ण भूमिकाएँ निभायी तथा अपना पूरा जीवन सामाजिक दोषों को दूर करने में खपा दिया लेकिन जमीनी सच्चाई तो यह है कि अभी भी जड़ से इसका अंत नहीं हो पाया है और ना ही इसका शत प्रतिशत अंत किया जा सकता है। यह एक विष की तरह है जो सामाजिक एकता और समरसता के बीच खाई का काम कर रहा है। सामाजिक संगठन विश्व हिंदू परिषद ने 1969, उडुपी में धर्माचार्यों की परिषद आयोजित कर जगद्गुरु की उपस्थिति में अस्पृश्यता को कलंक मानकर उससे मुक्त होने की ऐतिहासिक घोषणा की एवं इसी तरह सन 1979 में प्रयागराज में हुए विश्व हिंदू सम्मेलन में देश के कोने-कोने से आये साधु संतों ने अस्पृश्यता वा छुआछूत को अधार्मिक बताते हुए मंच से इसकी पुरजोर आलोचना की तथा इसे सामाजिक अभिशाप बताते हुए इस द्वेष भाव को जड़ से खत्म करने का एलान किया।

समरसता को समाज में स्थापित करने एवं बुराइयों को जड़ से समाप्त करने के लिए हमारे वेदों ने कई उचित मार्ग बताए हैं।

मित्रस्याहं चक्षुषा सर्वाणि भूतानि समीक्षे। मित्रस्य चक्षुषा समीक्षामहे।

तात्पर्य सारा विश्व मेरी ओर मित्रता भरे नजरों से देखे तो मुझे भी विश्व की तरफ मित्रता की नजर से देखना चाहिए। हमें अपने वेदों, शास्त्रों, ग्रंथों और दर्शनों के श्रेष्ठ चिंतन के विचारों को आचरण में लाने का प्रयास करना चाहिए। कहते हैं जैसे विविधता प्रकृति का गुण है जिसमें वह हमें भिन्न-भिन्न प्रकार की चीजें उपलब्ध कराती है जिसमें कुछ हितकर और कुछ घातक होती हैं। उसी प्रकार हमारा समाज विविधताओं से बंटा हुआ है। सभी को सौ फीसद संतुष्ट नहीं किया जा सकता, लेकिन फिर भी अगर हम सौ फीसद के आसपास भी समाज को समरस बनाने में सफल हो जाते हैं तो इसे सामाजिक एकता, उत्थान और बदलाव की बड़ी सफलता की दृष्टि से देखा जा सकता है। इस सफलता को सही दिशा में ले जाने का कार्य हमारे त्योहार बखूबी निभा सकते हैं। क्योंकि त्योहार सदभाव, सकारात्मकता, भाईचारा, एक दूसरे के प्रति विश्वास, निष्ठा, समर्पण, एक दूसरे को माफ करने की भावना, भेदभाव खत्म करने की दृष्टि से बहुत महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। यह एक बड़ी आबादी को एक साथ प्रभावित करने की क्षमता रखते हैं। इसमें विजयादशमी एक प्रमुख त्योहार है जो कई राज्यों में मनाया जाता है, यह इसी बात का प्रतीक है कि हम इन सभी बुराइयों को मिटाकर, राम भगवान द्वारा दिखाये गए आदर्श और राष्ट्र के महापुरुषों के द्वारा बताये गये सन्मार्ग पर चलकर समाज में समरसता के भाव को जागृत करें। राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ ने भी अपने शताब्दी वर्ष के पंच परिवर्तन में समरसता जैसे मुद्दे को प्रमुखता से शामिल किया है और जमीनी स्तर पर इस अभियान पर काम करने के लिए कई महत्वपूर्ण निर्णय लिए हैं जिसे इस बार धरातल पर साकार किए जाने की पूर्ण तैयारी है। हमारे देश के प्रधान सेवक माननीय नरेंद्र मोदी जी ने संघ के शताब्दी वर्ष के उद्बोधन के दौरान, संघ के पंच परिवर्तन के समरसता विषय को आज के परिप्रेक्ष्य में सामाजिक एकता के लिए बहुत महत्वपूर्ण कदम बताया और कहा आज के संदर्भ में सामाजिक समरसता राष्ट्र निर्माण और सामाजिक विकास के लिए अति आवश्यक है। संघ प्रमुख मोहन भागवत जी ने भी विश्व के लोगों से आह्वान किया कि सभी देशों को इसके प्रति सकारात्मक दृष्टिकोण अपनाना चाहिए। अहंकार, ईर्ष्या, क्रोध, जैसी कुरीतियों को खत्म कर, समाज में सद्भाव लाने, सद्गुणों को अपनाने और लोगों को गले लगाकर समरसता का संदेश देने का पर्व का नाम है विजयादशमी।

विजयादशमी केवल बुराई पर अच्छाई की विजय का पर्व नहीं अपितु समाज में समानता, एकता और सौहार्द का जीवंत प्रतीक है। यह हमें सिखाता है कि भेदभाव मिटाकर, दूसरों को गले लगाकर ही सच्चे अर्थों में 'वसुधैव कुटुंबकम्' की भावना साकार होती है। राम का जीवन, दुर्गा की शक्ति और हमारे त्योहार, सब इसी समरसता के सूत्र में बंधे हैं।

ISSN No. 2581-3528

वेदों में पंच परिवर्तन

डॉ. प्रवीण सत्येन्द्र विद्यालंकार
लेखिका व साहित्यकार, वैदिक दर्शन विशेषज्ञ एवं सामाजिक कार्यकर्त्री

सकल विश्व प्रकम्पित हो रहा है, कहीं युद्ध-विभीषिका, तो कहीं प्राकृतिक मानवीय आपदाएं, सर्वत्र अनन्त कण्ठों से एक ही आर्तनाद (करुण पुकार) झंकृत हो रहा है– ''जीवन संरक्षेत'' यानी जीवन सुरक्षित रहना चाहिए एवं त्राहि माम-त्राहिमाम।

धरती से ब्रह्माण्ड तक का जीवन सुरक्षित एवं संतुलित रहने का मात्र एक ही उपाय है, ''वेदों में पञ्च-परिवर्तन''। 'वेद सभी धर्मों का मूल है, क्योंकि – **''धरति विश्वं यः स धर्मः''** – अर्थात् जो विश्व को धारण करे वह धर्म है, जो वेदों में है। वेदों में ज्ञान-विज्ञान का उज्ज्वल भण्डार है। वेदों में मानवता, राष्ट्र की अखण्डता, एकता एवं समानता के अभ्युदय की पराकाष्ठा है। ज्ञान के महासागरों में से वेद सभी विद्याओं का आदिस्रोत है।

पंच परिवर्तन वेदों में ही क्यों?

जब पिता तुल्य **परम आदरणीय श्री कृपाशंकर बाबू जी** ने मुझे **''वेदों में पंच - परिवर्तन''** का गुरुतम विषय प्रदान किया, तो मैंने **विश्व नियंता परमपिता प्रभुवर** का हृदय से आभार प्रकट करने लगी। क्योंकि वेद परमात्मा के निःश्वास हैं और वेदों के पंच – परिवर्तन की जिस आध्यात्मिक, सामाजिक एवं बौद्धिक गतिशीलता के साथ वैचारिक क्रांति लाई जा सकती है, उस प्रकार किसी अन्य ग्रन्थ द्वारा नहीं। क्यों? इसे मैं निम्न बिन्दुओं के साथ स्पष्ट करूँगी –

- वेद परमात्मा द्वारा प्रदत्त दिव्य ज्ञान हैं।
- दिव्य ज्ञान अर्थात् यह लौकिक एवं परलौकिक उन्नति का मार्ग हैं।
- वेदों में तृण से लेकर ब्रह्मपर्यन्त सारा ज्ञान और विज्ञान भरा हुआ है।
- वेद अखिल विद्याओं और विधाओं के आदि स्रोत है।
- सारा साहित्य वेदों का उच्छिष्ठ है।
- **"नहि वेदात्पंर शास्त्रम्" अर्थात् संसार में वेद से बढ़कर कोई शास्त्र नहीं इति।**
- पंच – परिवर्तन इसी ज्ञान एवं विज्ञान का सार हैं।

अब हम पंच परिवर्तन को आगे बढ़ाते हैं।

स्वबोधः ''स्वबोध'' वैदिक सनातन संस्कृति का प्राणतत्त्व है, आत्मा है। क्योंकि स्वबोध ही स्वराज्य (स्वदेश, स्वभाषा, स्वसंस्कृति, स्वसंस्कार, स्वसभ्यता, स्वसाधना

एवं स्वावलम्बन) का आधार है। महाराजा भर्तृहरि ने स्वबोध (आत्मबोध) पर नीतिशतक में एक श्लोक दिया है –

''स्वबोधेन विनान्ययाडप्युपायैः
प्रयत्नैविनयैरन्यदपि।
न सिध्यत्युपदेशो हि जन्तोः
स्वयमेव हि यत्नो हि कारणम्।।''

अर्थात् मनुष्य को स्वयं का बोध नहीं है, तो हजारों उपदेश नियम और बाह्य उपाय भी उसे सही दिशा नहीं दे सकते। अतः स्वबोध ही मानव उन्नयन का कारण है। स्वबोध के सन्दर्भ में ऋग्वेद का आदेश है–

''अग्ने तन्वं जुषस्व'' (ऋ० ३/१/१)

अर्थात् हे ज्ञान मानव तुम अपनी आत्मा को जानो, स्वदर्शन करो, स्वमूल्यांकन करो, स्वनिरीक्षण करो, ताकि तुम्हारा जन्म–प्रयोजन सार्थक हो सके।

कुटुम्ब-प्रबोधन : परिवार ही व्यक्ति समाज एवं राष्ट्र की आधारशिला है। क्योंकि दया, करुणा, सौहार्द्र, संस्कार एवं नैतिक मूल्यों का साँचा माता–पिता हैं और माता–पिता कुटुम्ब के स्तम्भ।

वर्तमान समय में उपर्युक्त पारिवारिक मूल्य तेजी से टूट रहे हैं, बिखर रहे हैं। पारिवारिक मूल्यों को समझना, सीखना एवं राष्ट्र की एकता–अखण्डता के लिए संरक्षित करना ही कुटुम्ब–प्रबोधन है। **महाराजा भर्तृहरि के शब्दों में ''न कुलं तु भवेत् कुलीनतायां।''** अर्थात् परिवार का धर्म (नीति, संस्कार, संयम आदि) ही धरती का आधार है।

यदि हमारे राष्ट्र को समृद्ध एवं उन्नत करना है तथा बच्चों को, युवाओं को गलत मार्ग से बचाना है, तो कुटुम्ब–प्रबोधन की भावना को जीवन में उतारना होगा।

अथर्ववेद का उपदेश है–

''अनुव्रतः पितुः पुत्रः।'' (अथर्व० ३/३०/२)

अर्थात् पुत्र पिता का अनुवर्तन करने वाला हो, यानी पिता के शुभ, गुणों, सदाचार एवं आदर्श विचारों को बढ़ाने वाला हो।

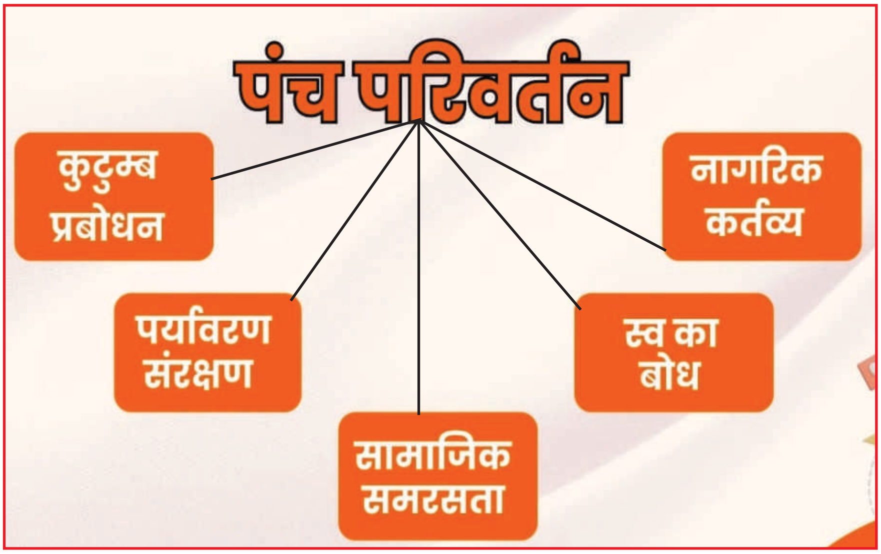

यजुर्वेद में गृहस्थ आश्रम की महिमा बड़े ही सुन्दर शब्दों में की है।

सामाजिक समरसता : सामाजिक समररसत्ता के सन्दर्भ में ऋग्वेद का संगठन सूक्त तथा अथर्ववेद का सांमनस्य सूत्र अप्रतिम व अद्भुत उदाहरण हैं।

''सहृदयं सांमनस्यमविद्वेषं कृणोमि वः। अन्यो अन्यमभिहर्यत वत्सं जातमिवाघ्न्या।।

अर्थात् सभी राष्ट्रवासी विद्वेष को हटाकर सहृदयता और सांमनस्यता को धारण करें। इसे इस प्रकार धारण करें जैसे गौ माता अपने बछड़े से प्रीति करती है। यही राष्ट्र के ऐश्वर्य एवं अभ्युदय का मूलमंत्र है।

नागरिक कर्तव्य : नागरिक कर्तव्य के सन्दर्भ में मुझे मनु महाराज का एक अत्यंत प्रेरक श्लोक स्मरण हो रहा है–

स्वधर्मे निधनं श्रेयः
पर धर्मो भयावहः।।

मनुस्मृति में कहा गया है कि प्रत्येक नागरिक को अपने समाज, अपने राष्ट्र और अपने कर्मक्षेत्र के प्रति कर्तव्यनिष्ठ रहना चाहिए, क्योंकि यही सच्चा धर्म है।

ऋग्वेद का आदेश है–

''त्वं सोम क्रतुभिः सुक्रतुर्भूः।''

अर्थात् हे मानव राष्ट्र में स्थिरता लाने के लिए एवं इसे समृद्ध बनाने के लिए तू अपने सद्गुणों एवं शुभ विचारों से उत्तम कर्मों से सुकर्मा बन जा ।

पर्यावरण संरक्षण : वेदों में पर्यावरण – संरक्षण का वर्णन अनेक प्रकार है, यथा–वायु, जल, ध्वनि, वर्षा, खाद्य, मृदा, वनस्पति, वन सम्पदा, पशु–पक्षी आदि।

''वात आ वातु भेषजं शुभ मयोभुनो हृदो।''

इसका अर्थ है कि स्वच्छ वायु सेवन औषध है, जो हमारे हृदय के लिए, फेफड़ों के लिए आरोग्य एवं आयु प्रदान करे।

♦ **अब पर्यावरण संरक्षण की बात यदि हम महर्षि वाल्मीकि के दृष्टिकोण से करें तो वे मनुष्य को उसकी प्रत्येक अवस्था में प्रकृति की ही पृष्ठभूमि में दिखाते हैं, जिससे यह सिद्ध होता है कि रामायणकालीन समाज पर्यावरण मित्र भी था। उदाहरण के लिए महर्षि वाल्मीकि ने भगवान श्री राम वन गमन प्रसंग में एक दिव्य वृक्ष का वर्णन है, जिसका नाम 'सत्योपयाचन' है।**

हम अंततः कह सकते है कि पंच परिवर्तन राष्ट्रोन्नति के पाँच–तत्व हैं।

■

ISSN No. 2581-3528

आत्मनिर्भर भारत : अब दूसरों की नहीं अपनी शर्तों पर विकास

डॉ. अनिल कुमार निगम
प्रोफेसर, आईएमएस गाजियाबाद
(यूनिवर्सिटी कोर्सेस कैंपस)

दूसरे देशों पर निर्भरता भारत का सबसे बड़ा दुश्मन है।

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी का यह कथन केवल एक भाषण का हिस्सा नहीं अपितु भारत के भविष्य की दिशा और दृष्टि का सार है। इस वाक्य के पीछे आर्थिक, सामरिक, सामाजिक और मनोवैज्ञानिक सभी आयाम छिपे हैं। आत्मनिर्भरता आज केवल एक आदर्श नहीं, बल्कि राष्ट्रीय अस्तित्व की अनिवार्यता बन चुकी है।

भारत की आत्मनिर्भरता की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि : 1947 के बाद भारत ने विकास की लंबी यात्रा तय की। प्रारंभिक दशकों में देश 'लाइसेंस-कोटा राज' की जटिलताओं में उलझा रहा। उद्योग सीमित थे, उत्पादन क्षमता कम थी और आयात पर भारी निर्भरता थी। 1991 में उदारीकरण और वैश्वीकरण की लहर ने अर्थव्यवस्था को खोल दिया, लेकिन साथ ही आयात-निर्भरता और विदेशी तकनीकी प्रभुत्व भी बढ़ा दिया। उस समय के सुधारों ने प्रतिस्पर्धा को तो बढ़ाया, परंतु आत्मनिर्भरता की भावना को कमजोर किया। इसी पृष्ठभूमि में प्रधानमंत्री मोदी का 'आत्मनिर्भर भारत' का नारा आया-जो केवल स्वदेशी वस्तुओं की खरीद का आह्वान नहीं, बल्कि भारत की आर्थिक स्वतंत्रता का आधुनिक खाका है।

'चिप से शिप तक' - आत्मनिर्भरता का व्यापक दृष्टिकोण : हाल ही में प्रधानमंत्री मोदी ने गुजरात के धोलेरा विशेष निवेश क्षेत्र (Dholera SIR) और लोथल में राष्ट्रीय समुद्री विरासत परिसर (NMHC) की समीक्षा की। ये दोनों परियोजनाएँ प्रतीक हैं कि भारत अब केवल 'उपभोक्ता राष्ट्र' नहीं, बल्कि 'उत्पादक राष्ट्र' बनने की दिशा में बढ़ रहा है। प्रधानमंत्री का कथन - "चिप से लेकर शिप तक, सब कुछ भारत में बनाना है" - आत्मनिर्भर भारत के व्यावहारिक खाके का सार है।

'चिप' का अर्थ केवल सेमीकंडक्टर तक सीमित नहीं है; यह तकनीकी आत्मनिर्भरता का प्रतीक है। वहीं, 'शिप' भारत की समुद्री और औद्योगिक क्षमता का द्योतक है। जब तक भारत डिजिटल तकनीक, रक्षा उत्पादन और परिवहन अवसंरचना में आत्मनिर्भर नहीं होगा, तब तक आर्थिक स्वतंत्रता अधूरी रहेगी।

अमेरिका की नीति और भारत की रणनीतिक चुनौतियाँ : भारत-अमेरिका संबंध बहुआयामी हैं। सुरक्षा, इंडो-पैसिफिक रणनीति और कूटनीतिक मंचों पर दोनों देशों का मेल दिखाई देता है, परंतु आर्थिक मोर्चे पर स्थिति भिन्न है। अमेरिका की बदलती टैरिफ नीतियाँ भारत की निर्यात क्षमता पर प्रतिकूल प्रभाव डालती हैं।

उदाहरण के लिए, ट्रम्प शासनकाल में अमेरिका ने भारत को Generalized System of Preferences (GSP) से बाहर कर दिया, जिससे भारतीय निर्यातकों को हर साल अरबों डॉलर का नुकसान हुआ। इसके अलावा, सेमीकंडक्टर और आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस में अमेरिका की तकनीकी एकाधिकारवादी नीति भारत के स्वदेशी विकास में बाधक रही है। इससे स्पष्ट है कि मित्रता के बावजूद, भारत को किसी भी राष्ट्र पर पूर्ण निर्भर नहीं रहना चाहिए। आत्मनिर्भर भारत का मूल दर्शन यही है संतुलित सहयोग और स्वतंत्र क्षमता।

चीन : सबसे बड़ी आर्थिक चुनौती : चीन भारत की आत्मनिर्भरता के लिए सबसे बड़ा आर्थिक प्रतिद्वंद्वी है। आज भारत-चीन व्यापार में 70 अरब डॉलर से अधिक का असंतुलन है। भारत चीन से भारी मात्रा में इलेक्ट्रॉनिक वस्तुएँ, सौर उपकरण, औषधियों के कच्चे पदार्थ और मशीनरी आयात करता है। इसके साथ ही चीन की Belt and Road Initiative (BRI) जैसी नीतियाँ भारत के रणनीतिक हितों को चुनौती देती हैं। श्रीलंका, नेपाल और पाकिस्तान में चीन का बढ़ता निवेश उसकी 'रणनीतिक घेरेबंदी' की नीति का हिस्सा है।

चीन ने जिस गति से अपनी उत्पादन क्षमता और अनुसंधान तंत्र को विकसित किया, वह भारत के लिए एक चेतावनी है। भारत यदि अपनी युवा जनसंख्या और संसाधनों का सही उपयोग करे, तो उसे चीन पर निर्भर रहने की आवश्यकता नहीं होगी।

सरकार की नई औद्योगिक पहलें :

ISSN No. 2581-3528

आत्मनिर्भरता की दिशा में ठोस कदम- प्रधानमंत्री मोदी की सोच केवल घोषणाओं तक सीमित नहीं है। केंद्र सरकार ने पिछले कुछ वर्षों में अनेक ठोस नीतियाँ लागू की हैं।

♦ धोलेरा विशेष निवेश क्षेत्र (Dholera SIR) – यह भारत का पहला 'प्लान्ड इंडस्ट्रियल स्मार्ट सिटी' है, जो पश्चिमी मालवाहक गलियारे से जुड़ा है। यहां इलेक्ट्रॉनिक्स, नवीकरणीय ऊर्जा, ऑटोमोबाइल और हाई–टेक उद्योगों को बढ़ावा दिया जा रहा है।

♦ सेमीकंडक्टर मिशन (India Semiconductor Mission) : ताइवान और अमेरिका जैसी तकनीकी साझेदारियों के साथ भारत अपने चिप निर्माण उद्योग को खड़ा करने की दिशा में अग्रसर है।

♦ मेक इन इंडिया और प्रोडक्शन लिंक्ड इंसेंटिव (PLI) योजनाएँ–मोबाइल, फार्मा, इलेक्ट्रॉनिक्स और रक्षा उद्योगों में आत्मनिर्भरता को बढ़ाने के लिए प्रोत्साहन योजनाएँ लागू की गई हैं।

♦ गति शक्ति और लॉजिस्टिक्स नीति – परिवहन, बंदरगाह, रेल, सड़क और हवाई नेटवर्क को एकीकृत कर उत्पादन व निर्यात को सुगम बनाने की दिशा में काम हो रहा है।

♦ 'वोकेशनल एजुकेशन और स्किल इंडिया मिशन' – युवाओं को वैश्विक प्रतिस्पर्धा के अनुरूप तकनीकी प्रशिक्षण देने की दिशा में पहल।

समुद्री शक्ति और 'शिपिंग इंफ्रास्ट्रक्चर' का महत्व : प्रधानमंत्री मोदी ने एक महत्वपूर्ण तथ्य पर ध्यान दिलाया कि आज भारत का केवल 5 प्रतिशत व्यापार अपने जहाजों से होता है, जबकि 50 वर्ष पहले यह 40 प्रतिशत था। यह आंकड़ा बताता है कि समुद्री शक्ति के बिना आत्मनिर्भरता अधूरी है।

भारत का प्राचीन समुद्री इतिहास लोथल और कालीबंगन की सभ्यताओं से जुड़ा है। परंतु आधुनिक युग में हमने अपने शिपिंग नेटवर्क को उपेक्षित किया। 'सागरमाला प्रोजेक्ट', 'भारतमाला योजना' और 'नेशनल लॉजिस्टिक्स पॉलिसी' अब इस कमी को दूर करने की दिशा में काम कर रही हैं।

सेमीकंडक्टर से रक्षा उत्पादन तक : आत्मनिर्भरता की नई धारा - 21वीं सदी की अर्थव्यवस्था "डिजिटल चिप" पर टिकी है। आज हर मोबाइल, कार, मशीन और रक्षा उपकरण में चिप जरूरी है। भारत का लक्ष्य है कि वह केवल उपभोक्ता नहीं, बल्कि उत्पादक बने। भारत सरकार ने Vedanta&FoÛconn] Micron] Tata Electronics जैसी कंपनियों के साथ साझेदारी कर सेमीकंडक्टर मैन्युफैक्चरिंग में निवेश बढ़ाया है। इसी तरह रक्षा क्षेत्र में 'मेक इन इंडिया' के तहत भारत ने मिसाइल, ड्रोन, और हथियार प्रणालियों के उत्पादन में उल्लेखनीय प्रगति की है। तेजस फाइटर जेट, अर्जुन टैंक और आकाश मिसाइल जैसी परियोजनाएँ इसका उदाहरण हैं।

युवा शक्ति और स्टार्टअप क्रांतिः आत्मनिर्भरता की नई ऊर्जा : भारत की 146 करोड़ की आबादी में लगभग 65 प्रतिशत लोग 35 वर्ष से कम आयु के हैं। यह युवा जनसंख्या भारत की सबसे बड़ी पूंजी है। प्रधानमंत्री मोदी ने स्टार्टअप इंडिया, डिजिटल इंडिया और मेक इन इंडिया जैसी पहलों के माध्यम से युवाओं को नवाचार की दिशा में प्रेरित किया है।

भारत आज दुनिया का तीसरा सबसे बड़ा स्टार्टअप इकोसिस्टम बन चुका है। फिनटेक, एडटेक, हेल्थटेक और एग्रीटेक क्षेत्रों में नवाचार की लहर आई है। ये स्टार्टअप न केवल रोजगार दे रहे हैं, बल्कि स्थानीय समस्याओं का स्थानीय समाधान भी खोज रहे हैं–यही आत्मनिर्भर भारत का असली अर्थ है।

आत्मनिर्भरता का सामाजिक और मनोवैज्ञानिक आयाम : आत्मनिर्भरता केवल उत्पादन या व्यापार तक सीमित नहीं है; यह आत्मविश्वास और मानसिक स्वतंत्रता का प्रतीक है। विदेशी वस्तुओं के प्रति मोह, उपभोक्तावाद और ब्रांड–भक्ति से बाहर निकलना आवश्यक है। जब तक हम भारतीय उत्पादों पर गर्व करना नहीं सीखेंगे, तब तक आत्मनिर्भरता अधूरी रहेगी। गांधीजी का स्वदेशी आंदोलन केवल आर्थिक नहीं, बल्कि आत्मसम्मान का आंदोलन था।

शिक्षा और अनुसंधान : आत्मनिर्भरता की असली बुनियाद : भारत को आत्मनिर्भर बनाने की जड़ें शिक्षा में छिपी हैं। यदि विश्वविद्यालय और शोध संस्थान उद्योग की जरूरतों के अनुरूप अनुसंधान करें, तो विदेशी तकनीक पर निर्भरता घटेगी। नेशनल रिसर्च फाउंडेशन (NRF) जैसी नई पहलें उद्योग और शिक्षा जगत को जोड़ने का प्रयास हैं।

नई शिक्षा नीति (NEP 2020) ने छात्रों में क्रिटिकल थिंकिंग, नवाचार और उद्यमिता की भावना को प्रोत्साहन देने पर बल दिया है। आत्मनिर्भर भारत का अगला चरण तभी संभव है, जब हम शिक्षा को उद्योग से जोड़ें और अनुसंधान को वास्तविक उत्पादन से।

भारत की भू-राजनीतिक अनिवार्यता : आत्मनिर्भर भारत केवल आर्थिक नीति नहीं, बल्कि भू–राजनीतिक रणनीति भी है। अमेरिका की टैरिफ नीतियाँ यह सिखाती हैं कि हमें मित्र देशों पर भी पूरी तरह निर्भर नहीं रहना चाहिए। चीन की विस्तारवादी नीति हमें सावधान करती है कि अगर हमने अपने उद्योगों को मजबूत नहीं किया, तो हम केवल बाजार बनकर रह जाएंगे।

2047 का भारत : आत्मनिर्भरता से विश्वगुरु तक : प्रधानमंत्री मोदी का लक्ष्य है–2047 तक विकसित भारत। इसका आधार आत्मनिर्भर भारत ही है। जब भारत सेमीकंडक्टर बनाएगा, जब उसके जहाज विश्व के बंदरगाहों पर तिरंगा फहराएँगे, जब भारतीय ब्रांड वैश्विक पहचान बनेंगे–तभी भारत सच में विश्वगुरु कहलाएगा। इसके लिए तीन तत्व अनिवार्य हैं–नीति की स्थिरता, निजी क्षेत्र का भरोसा और जनता का सहयोग और आत्मविश्वास।

आत्मनिर्भरता कोई विकल्प नहीं, अनिवार्यता है : आज का भारत केवल विकास की नहीं, बल्कि विकसित भारत की दिशा में बढ़ रहा है। परंतु यह यात्रा तभी सफल होगी जब हर भारतीय आत्मनिर्भरता को व्यक्तिगत जिम्मेदारी समझे।

"चिप से शिप तक सब कुछ भारत में" बनाना केवल सरकार की जिम्मेदारी नहीं, बल्कि हर नागरिक का राष्ट्रीय संकल्प है। यह नारा नहीं, नवभारत का नया अध्याय है। आत्मनिर्भर भारत ही वह औषधि है, जो हमें विदेशी निर्भरता, व्यापार घाटे और आर्थिक असंतुलन जैसी बीमारियों से मुक्ति दिला सकती है। ■

ISSN No. 2581-3528

गुरुकुल से आधुनिक विद्यालय तक भारतीय शिक्षा की गौरवशाली परंपरा और ह्रास

डॉ. रामशंकर
सहायक प्रोफेसर, पत्रकारिता एवं जनसंचार विभाग
आईआईएमटी कॉलेज ऑफ मैनेजमेंट, ग्रे. नोएडा

सारांश : भारत की शिक्षा प्रणाली विश्व में सबसे प्राचीन और सुव्यवस्थित मानी जाती है। वैदिक काल से लेकर मध्यकाल तक भारत में लाखों गुरुकुल संचालित थे जहाँ शिक्षा केवल ज्ञानार्जन नहीं बल्कि संस्कार, आत्मविकास और सामाजिक उत्तरदायित्व का माध्यम थी। जबकि उसी काल में यूरोप विशेषतः इंग्लैंड में औपचारिक विद्यालय व्यवस्था प्रारंभिक अवस्था में थीं। यह शोध आलेख भारत के गुरुकुल परंपरा के उत्कर्ष और पतन की ऐतिहासिक यात्रा का विश्लेषण करता है। इसमें औपनिवेशिक काल में भारतीय शिक्षा पर पड़े प्रभाव, आधुनिक शिक्षा के आगमन, तथा आज के परिप्रेक्ष्य में गुरुकुल प्रणाली के पुनर्जीवन की संभावनाओं का विवेचन किया गया है।

स्वतंत्रता के बाद भी भारत ने पश्चिमी मॉडल को अपनाया, जिससे शिक्षा का चरित्र व्यवसायिक होता गया। हालाँकि, राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ (RSS) ने इस पारंपरिक शिक्षा दर्शन के पुनर्जागरण में निर्णायक भूमिका निभाई – जैसे विद्या भारती, सरस्वती शिशु मंदिरों, और भारतीय ज्ञान परंपरा आधारित शिक्षण मॉडल के माध्यम से।

यह शोध आलेख भारत की गुरुकुल परंपरा, उसके पतन के कारणों, और संघ के माध्यम से उसके पुनर्जागरण की प्रक्रिया का ऐतिहासिक और तुलनात्मक विश्लेषण प्रस्तुत करता है।

मुख्य शब्द : गुरुकुल प्रणाली, औपनिवेशिक शिक्षा, वैदिक परंपरा, भारतीय ज्ञान प्रणाली, राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020।

परिचय : भारत सदियों से ज्ञान और आध्यात्मिक चेतना का केंद्र रहा है। यहाँ शिक्षा को केवल आजीविका का साधन नहीं बल्कि जीवन का मार्ग माना गया। गुरुकुल प्रणाली भारतीय समाज की आत्मा थी। विद्यार्थी, गुरु के सान्निध्य में रहकर शिक्षा, अनुशासन, सेवा और आत्मानुशासन सीखते थे। ऐतिहासिक रूप से यह तथ्य स्वीकार्य है कि भारत में जब लाखों गुरुकुल सक्रिय थे, तब इंग्लैंड और यूरोप में औपचारिक शिक्षा संस्थानों का उद्भव भी नहीं हुआ था। उदाहरणतः

इंग्लैंड का पहला स्कूल "King*s School, Canterbury" 597 ई. में स्थापित हुआ, जबकि भारत में उससे हजारों वर्ष पूर्व तक्षशिला, नालंदा, विक्रमशिला, वल्लभी और कांचीपुरम जैसे विश्वविद्यालय संचालित थे।

भारतीय शिक्षा का मूल उद्देश्य 'विद्या ददाति विनयम्' – अर्थात् शिक्षा से विनम्रता, विवेक और नैतिकता का विकास था।

प्राचीन भारत में गुरुकुल प्रणाली–

गुरुकुल शब्द 'गुरु' और 'कुल' से बना है, जिसका अर्थ है "गुरु का निवास स्थान"।

गुरुकुल शिक्षा का केंद्र था जहाँ विद्यार्थी गुरु के संरक्षण में जीवन के विविध आयामों की शिक्षा ग्रहण करते थे।

गुरुकुलों की मुख्य विशेषताएँ–

1. शिक्षा का उद्देश्य : नैतिकता, धर्म, आत्मज्ञान, और समाज सेवा।
2. विषय : वेद, उपनिषद, गणित, ज्योतिष, चिकित्सा, व्याकरण, धनुर्विद्या, नीति और दर्शन।
3. शिक्षण पद्धति : मौखिक, संवादात्मक, श्रवण–मनन–निदिध्यासन पर आधारित।
4. जीवनशैली : आश्रमिक जीवन – ब्रह्मचर्य, संयम और आत्मसंयम पर बल।
5. शिक्षा का माध्यम : संस्कृत भाषा।
6. आर्थिक मॉडल : समाज और राजा द्वारा सहायता; शिक्षा निःशुल्क।

प्रसिद्ध गुरुकुल और विश्वविद्यालय :

- तक्षशिला (600 ई.पू.) : विश्व का प्रथम विश्वविद्यालय, जहाँ विश्व के 10,000 से अधिक विद्यार्थी अध्ययनरत थे।
- नालंदा विश्वविद्यालय (5वीं सदी ई.) : 10,000 विद्यार्थी, 2,000 शिक्षक।
- विक्रमशिला विश्वविद्यालय : बौद्ध तंत्र विद्या का प्रमुख केंद्र।
- कांचीपुरम, वल्लभी, उज्जैन, मिथिला, श्रावस्ती : विद्या के उच्च केंद्र।

इन संस्थानों ने न केवल भारत बल्कि चीन, तिब्बत, श्रीलंका, म्यांमार और कोरिया तक शिक्षा का प्रसार किया।

जब भारत में लाखों गुरुकुल थे–

अनेक ऐतिहासिक और औपनिवेशिक अभिलेख इस बात के साक्ष्य हैं कि 18वीं सदी तक भारत में शिक्षा अत्यंत व्यापक थी।

- थॉमस मुनरो (1812) ने मद्रास प्रेसीडेंसी में किए सर्वे में पाया कि लगभग हर गाँव में एक स्कूल था।
- विलियम एडम रिपोर्ट (1835) के अनुसार, बंगाल और बिहार के लगभग 1 लाख से अधिक विद्यालय उस समय सक्रिय थे।
- धर्मपाल की पुस्तक The Beautiful Tree के अनुसार, ब्रिटिश शासन से पहले भारतीयों की साक्षरता दर 70 प्रतिशत से अधिक थी।
- 18वीं सदी में भारत में शिक्षा प्रणाली स्थानीय समाज द्वारा संचालित थी – सरकारी हस्तक्षेप नगण्य था।

यह आँकड़े स्पष्ट करते हैं कि शिक्षा भारतीय समाज की आत्मा में रची–बसी थी।

इंग्लैंड में शिक्षा की प्रारंभिक स्थिति :

इंग्लैंड का पहला औपचारिक विद्यालय King*s School, Canterbury (597 ई.) में स्थापित हुआ, जिसे धार्मिक शिक्षा के लिए बनाया गया था।

उस समय यूरोप में साक्षरता दर अत्यंत निम्न थी, और शिक्षा केवल राजघरानों या चर्च से जुड़े लोगों तक सीमित थी।

इसकी तुलना में भारत में तब तक :

- वेदिक गुरुकुल प्रणाली विकसित थी,
- विश्वविद्यालय स्तर की शिक्षा स्थापित थी,
- और स्त्री शिक्षा भी विद्यमान थी (उदाहरण – गार्गी, मैत्रेयी, लोपामुद्रा)।

इससे स्पष्ट होता है कि जब पश्चिमी देश शिक्षा के प्रारंभिक चरण में थे, भारत में ज्ञान का विशाल वृक्ष पूरी तरह विकसित हो चुका था।

गुरुकुल प्रणाली का पतन :

1. औपनिवेशिक शासन का प्रभावः 1835 में लॉर्ड मैकाले की 'Minute on Indian Education' ने भारतीय शिक्षा प्रणाली को यूरोपीय ढाँचे में ढालने का प्रयास किया। उन्होंने कहा – "A single shelf of a good European library is worth the whole native literature of India and Arabia" इस दृष्टिकोण ने भारतीय भाषा, संस्कृति और गुरुकुल परंपरा को "अप्रासंगिक" घोषित कर दिया।

2. संस्कृत और परंपरागत ज्ञान की उपेक्षा : अंग्रेजी माध्यम और पश्चिमी पाठ्यक्रम ने वैदिक शिक्षा को हाशिए पर डाल दिया।

3. राजकीय संरक्षण का अभाव : ब्रिटिश शासन ने गुरुकुलों की आर्थिक सहायता समाप्त कर दी, जिससे वे धीरे–धीरे नष्ट हो गए।

4. रोजगारोन्मुख शिक्षा का प्रभाव : नई शिक्षा प्रणाली ने शिक्षा को नौकरी का माध्यम बना दिया, जबकि गुरुकुल जीवन मूल्य और आत्मज्ञान पर केंद्रित थे।

भारतीय समाज पर प्रभाव :

- पारंपरिक ज्ञान, आयुर्वेद, वेदांत, और योग की शिक्षा सीमित हो गई।
- नैतिकता और जीवनमूल्यों की शिक्षा का स्थान केवल परीक्षा–आधारित प्रणाली ने ले लिया।
- शिक्षक–शिष्य संबंध औपचारिक हो गया; गुरु–शिष्य परंपरा समाप्त होने लगी।
- ग्रामीण भारत की शिक्षा प्रणाली, जो समाज–निर्माण की धुरी थी, टूट गई।

स्वतंत्रता पश्चात स्थिति : स्वतंत्रता के बाद भारत ने पश्चिमी शिक्षा प्रणाली को ही अपनाया। यद्यपि नई नीतियों में सुधार के प्रयास हुए, परंतु भारतीयता की आत्मा पुनः जीवित नहीं की जा सकी।

प्रमुख सुधार प्रयास –

- गांधी जी की 'नयी तालीम' (Basic Education)– शिक्षा को श्रम और नैतिकता से जोड़ने का प्रयास।
- डॉ. राधाकृष्णन आयोग (1948) – भारतीय परंपरा और आधुनिकता के संतुलन की सिफारिश।
- राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 (NEP 2020) : भारतीय ज्ञान प्रणाली (Indian Knowledge System) को पुनः लाने का संकल्प।

आधुनिक युग में गुरुकुल पुनर्जागरण (Revival in Modern Times)

आज भारत में अनेक संस्थाएँ पारंपरिक शिक्षा को पुनर्जीवित करने में कार्यरत हैं–

- गायत्री तपोभूमि (हरिद्वार): वैदिक शिक्षा और नैतिक संस्कार पर आधारित आधुनिक गुरुकुल।
- स्वामीनारायण गुरुकुल, राजकोट।
- सांदीपनी विद्या निकेतन, उज्जैन।
- राष्ट्रसंत तुकड़ोजी महाराज गुरुकुल, नागपुर।

डिजिटल युग में "ई–गुरुकुल" जैसे प्रयोग भी किए जा रहे हैं, जहाँ वैदिक ग्रंथों की ऑनलाइन शिक्षा दी जा रही है।

समकालीन शिक्षा और गुरुकुल का समन्वय : गुरुकुल प्रणाली की मूल अवधारणाएँ – अनुशासन, जीवन मूल्य, आत्मबोध, पर्यावरणीय संतुलन – आज के युग में भी प्रासंगिक हैं। यदि इन मूल्यों को आधुनिक पाठ्यक्रम में जोड़ा जाए, तो शिक्षा केवल सूचना नहीं, बल्कि संस्कार बन सकती है। इनमें 'गुरु–शिष्य परंपरा' को 'मेंटर–मेंटे मॉडल' के रूप में लागू किया जा सकता है। संस्कृत, योग, ध्यान, नैतिक शिक्षा को विद्यालयी पाठ्यक्रम में समाहित किया जा सकता है। ग्रामीण शिक्षा के लिए स्थानीय गुरुकुल मॉडल विकसित किया जा सकता है।

निष्कर्ष : भारत की शिक्षा परंपरा विश्व की सबसे प्राचीन और पूर्ण प्रणाली थी। जब इंग्लैंड में पहला स्कूल खुला, भारत में शिक्षा का ऐसा तंत्र था जो ज्ञान, विज्ञान और आध्यात्मिकता का समन्वय करता था। औपनिवेशिक नीतियों ने इस परंपरा को तोड़ दिया, परंतु आज समय है कि हम अपने गौरवशाली अतीत से प्रेरणा लेकर भविष्य का निर्माण करें। विकसित भारत का स्वप्न तभी साकार होगा जब शिक्षा केवल कौशल नहीं, संस्कार भी दे। गुरुकुल की आत्मा – 'संपूर्ण मानव निर्माण' – को आधुनिक शिक्षा से जोड़ना ही सच्चा राष्ट्रनिर्माण होगा।

संदर्भ सूची

1. Altekar, A- S- (1944). Education in Ancient India. Banaras Hindu University Press.
2. Dharampal. (1983). The Beautiful Tree: Indigenous Indian Education in the Eighteenth Century- Biblia Impex.
3. Macaulay, T. B. (1835). Minute on Indian Education. Government of India Archives.
4. Max Müller, F. (1891). India: What Can It Teach Us? Longmans, Green & Co.
5. Hunter, W. W. (1882). Indian Education Report. London: British Parliament Records.
6. Ministry of Education, Government of India. (2020). National Education Policy 2020.
7. शर्मा, के. एन. (2010). भारतीय शिक्षा का इतिहास. नई दिल्ली – भारतीय विद्या भवन।
8. पांडे, जी. सी. (2018). गुरुकुल परंपरा और भारतीय शिक्षा दर्शन. वाराणसी– मोतीलाल बनारसीदास।
9. सिंह, ए. के. (2022). भारतीय ज्ञान परंपरा और आधुनिक शिक्षा नीति. नई दिल्ली– प्रकाशन संस्थान।
10. थॉमस, मुनरो. (1812). Madras Presidency Educational Survey. British Library Archives.

■

मीडिया में श्री विजयादशमी उत्सव एवं पथ संचलन

LIVE: RSS Vijayadashmi celebrations in Nagpur | Mohan Bhagwat | Centenary celebrations of RSS

ANI News

Nagpur RSS Vijayadashmi LIVE | राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघाचं शताब्दी वर्ष; मोहन भागवत काय बोलणार? LIVE

Zee 24 Taas

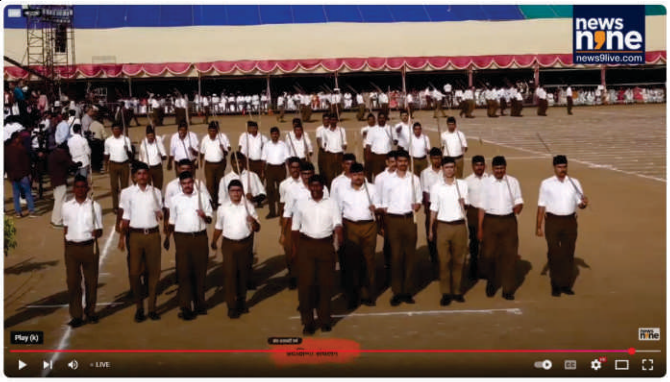

RSS 100 Years: Centenary Vijayadashami Celebration | Shatabdi Utsav 2025 | News9

NEWS9 Live

LIVE This Morning: Mohan Bhagwat Celebrates 100 Years Of RSS | Rajnath Singh Meets Soldiers In Bhuj

Republic World

राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ • शताब्दी समारोह पर संघ प्रमुख का उद्बोधन

जेन-जी हिंसा चिंता की बात, देश में भी ऐसी ताकतें सक्रिय: भागवत

सरकारों-समाजों के बीच दूरी से आ रही देशों में अशांति

भास्कर न्यूज़ | नागपुर

राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ प्रमुख मोहन भागवत ने जेन-जी की हिंसा के बाद श्रीलंका, बांग्लादेश और नेपाल में सरकारें गिराए जाने पर चिंता जताई है। उन्होंने कहा, इन तथाकथित क्रांतियों से उद्देश्य हासिल नहीं होते। साथ ही आगाह किया कि भारत में ऐसी अशांति पैदा करने की चाहत रखने वाली ...

मुख्य अतिथि पूर्व राष्ट्रपति रामनाथ कोविंद के साथ मोहन भागवत (बाएं)।

पथ संचलन से लिया राष्ट्र प्रेम का संकल्प

राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के **शताब्दी वर्ष** पर शहर में उत्साहपूर्ण कार्यक्रम, जगह-जगह पुष्पवर्षा कर किया स्वागत

उझानी में पथ संचलन में प्रतिभाग करते स्वयंसेवक • जागरण

मंडावली में विजयदशमी पर पथ संचलन करते आरएसएस के स्वयंसेवक • जागरण

आरएसएस ने तैयार किए राष्ट्र भक्त कार्यकर्ता : आलोक

संवाद सूत्र, जागरण • मंडावली : राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ नांगल खंड के मुस्सेपुर मंडल के मंडावली में विजयादशमी पर पथ संचलन किया। राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ की स्थापना के 100 वर्ष पूर्ण होने पर विशेष रूप से समाज में पंच परिवर्तन लाने के लिए संबोधित किया था। मुख्य वक्ता आलोक ने कहा कि 1925 में स्थापित हुए राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ जैसे देशभक्ति संगठन ने देश समाज में भारत माता को परम वैभव तक ले जाने के लिए अनेक राष्ट्र भक्त कार्यकर्ता तैयार किए हैं।

डा. केशव बलिराम हेडगेवार ने पांच स्वयंसेवकों के साथ डा. केशवराव बलिराम हेडगेवार ने की थी। वह आज वटवृक्ष के रूप में समाज में अपनी सेवा दे रहा है। जिला सह संघचालक गगन कर्णवाल ने परिवार प्रबोधन एवं नागरिक कर्तव्य पर प्रकाश डाला। हम सबको अपने अधिकारों से आगे बढ़कर अपने कर्तव्यों का निर्वहन करना चाहिए। खंड संघचालक सत्यपाल सिंह, खंड कार्यवाह पंकज सिंह, ब्लाक प्रमुख तपराज देशवाल, खंड कार्यवाह मोहन सिंह, बौद्धिक प्रमुख मोहित कुमार, शारीरिक प्रमुख शैलभ कुमार, संपर्क प्रमुख नितिन कुमार, प्रचार प्रमुख सचिन कुमार, आचार्य विक्रम सिंह आदि शामिल रहे।

संबोधन प्रेरणादायक, विश्व को लाभ: मोदी

स्वयंसेवकों की कदमताल, 100 वर्ष की यात्रा बेमिसाल

आरएसएस के शताब्दी वर्ष पर स्वयंसेवकों में दिखा गजब का उत्साह, राष्ट्र भक्ति का दिया संदेश

विजयदशमी पर आरएसएस ने किया पथ संचलन

60 स्थानों पर हुए पथ संचलन में 5,000 गणवेशधारी स्वयंसेवकों ने उत्साहपूर्वक लिया भाग

कांठ में आरएसएस ने निकाला पथ संचलन

कांठ। ग्राम नींगू नंगला में विजयदशमी के उपलक्ष्य में राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ ने पथ संचलन निकाला गया। कार्यक्रम में बड़ी संख्या में स्वयंसेवक शामिल हुए। खंड बौद्धिक प्रमुख संदीप ने स्वयंसेवकों को संघ के इतिहास और कार्यप्रणाली के बारे में विस्तार से खंड संघ चालक महेंद्र, खंड व्यवस्था प्रमुख जीवन, नगर खंड प्रचारक मीत, पूर्व

40 स्थानों पर निकाला पथ संचलन

शताब्दी वर्ष

स्वयंसेवकों का पथ संचलन, शस्त्र पूजा का महत्व बताया

हिन्दुस्तान

आरएसएस की विकास यात्रा पर प्रकाश डाला

स्वयंसेवकों ने निकाला पथ संचलन

पथ संचलन से नागरिकों में उत्साह के साथ भरी राष्ट्रभक्ति की भावना

संघ के 100 वर्ष पूर्ण होने पर किया पथ संचलन

पथ संचलन के साथ हुई राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ के विजयदशमी उत्सव की शुरुआत

स्वयं सेवकों ने शहर की छह बस्तियों में किया पथ संचलन

जनपद में 14 स्थानों पर कार्यक्रम, 11 बस्तियों में एकत्रीकरण

जागरण संवाददाता, मुजफ्फरनगर: आरएसएस के स्थापना दिवस के अवसर पर जिले भर में विभिन्न कार्यक्रम आयोजित किए गए। इस दौरान छह बस्तियों में पथ संचलन निकाला गया, जिसमें 'भारत माता की जय' और 'वंदेमातरम' के जयकारे ... स्वागत किया। पथ संचलन से पूर्व आरएसएस के क्षेत्रीय सदस्य किशन चंद ने एक बौद्धिक सत्र में विजय दशमी के महत्व पर प्रकाश डाला और श्रीराम के मार्ग पर चलने का आह्वान किया। उन्होंने संघ के 100 वर्षों की यात्रा का भी वर्णन किया।

रामपुरी की लक्ष्मण बस्ती में विभाग प्रचारक भूपेंद्र ने विजय दशमी और संघ के कार्यों पर विस्तार से चर्चा की। उन्होंने मर्यादाओं का पालन ...

14 बस्तियों में आरएसएस का पथ संचलन, दिखा अनुशासित ढंग से कदमताल

शहर से लेकर ग्रामीण इलाकों तक शताब्दी वर्ष का स्वयंसेवकों में दिखा हर्ष और उल्लास, जगह-जगह फूलों की वर्षा कर लोगों ने किया स्वागत

अमर उजाला ब्यूरो

मुरादाबाद। राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ अपने शताब्दी वर्ष के कार्यक्रमों की श्रृंखला में विजयदशमी और राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के स्थापना दिवस के अवसर पर रविवार को 14 पथ संचलन कार्यक्रम किए गए। मुरादाबाद महानगर को संगठन की दृष्टि से विभाजित 90 बस्तियों में पथ संचलन के कार्यक्रम होंगे।

आरएसएस के शताब्दी वर्ष को लेकर स्वयं सेवकों में उल्लास-उमंग दिखा।

मूंढापांडे में पद संचलन करते

कटघर में बैंड बाजे की धुन पर कदमताल

शहर में इन स्थानों पर किए गए कार्यक्रम

- पीतल नगरी की सूरज नगर बस्ती, गोविंद नगर की दुर्गेश बस्ती, गोविंद नगर की कृष्ण बस्ती, हनुमान नगर की दीवान बाजार बस्ती, रामगंगा विहार की आशियाना बस्ती, चंद्र नगर में, कांशीराम नगर की कांशीराम बस्ती, कांशीराम नगर की मिलन विहार बस्ती, प्रकाश नगर की गायत्री नगर बस्ती, नया मुरादाबाद की माता

स्वयंसेवकों ने किया पथ संचलन

वेव सिटी के मधुकर नगर और अन्य स्थानों पर बढ़-चढ़कर लिया भाग

माई सिटी रिपोर्टर

गाजियाबाद। राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ की ओर से रविवार को वेव सिटी की बस्ती मधुकर नगर समेत शहर के अन्य इलाकों में पथ संचलन का आयोजन किया गया। इसमें स्वयं सेवकों ने बढ़ चढ़कर भाग लिया।

हिन्दुस्तान

विजयदशमी के उत्सव पर पथ संचलन निकाला

कार्यक्रम

नमस्ते सदा वत्सले मातृभूमे
त्वया हिन्दुभूमे सुखवं वर्धितोऽहम्।
महामंगले पुण्यभूमे त्वदर्थे
पतत्वेष कायो नमस्ते नमस्ते।।१।।

हे वत्सल मातृभूमि! मैं तुम्हें सदैव प्रणाम करता हूँ। हे हिन्दुभूमि आपने ही मुझे सुख से बढ़ाया है। हे महामंगलमयी पुण्यभूमि आपके ही कार्य में मेरी यह काया (जीवन) समर्पित हो। आपको मैं अनन्त बार प्रणाम करता हूँ।

प्रभो शक्तिमन् हिन्दुराष्ट्राङ्गभूता
इमे सादरं त्वां नमामो वयम्
त्वदीयाय कार्याय बद्धा कटीयम्
शुभामाशिषन् देहि तत्पूर्तये।
अजय्यां च विश्वस्य देहीश शक्तिम्
सुशीलं जगद्येन नम्रं भवेत्
श्रुतं चैव यत्कण्टकाकीर्णमार्गम्
स्वयं स्वीकृतं नः सुगंकारयेत्।।२।।

हे सर्वशक्तिमान परमेश्वर ! हम हिन्दू राष्ट्र के अंगभूत घटक, तुझे आदर पूर्वक प्रणाम करते हैं। आपके कार्य के लिए ही हमने अपनी कमर कसी है। उसकी पूर्ति के लिए हमें शुभ आशीर्वाद देवें। विश्व के लिए जो अजेय हो ऐसी शक्ति, सारा जगत विनम्र हो ऐसा विशुद्ध शील तथा स्वयं के द्वारा स्वीकृत किये गये हमारे कण्टकमय पथ को सुगम करने वाला ज्ञान भी हमें देवें।

समुत्कर्ष निःश्रेयसस्यैकमुग्रम्
परं साधनं नाम वीरव्रतम्
तदन्तः स्फुरत्वक्षया ध्येयनिष्ठा
हृदन्तः प्रजागर्तु तीव्राऽनिशम्।
विजेत्री च नः संहता कार्यशक्तिर्
विधायास्य धर्मस्य संरक्षणम्
परं वैभवं नेतुमेतत् स्वराष्ट्रम्
समर्था भवत्वाशिषा ते भृशम्।।३।।
।। भारत माता की जय।।

अभ्युदय सहित निःश्रेयस की प्राप्ति का जो एकमेव श्रेष्ठ उग्र साधन है, उस वीरव्रत का हम लोगों के अन्तःकरण में स्फुरण होवे। अक्षय (कभी न खत्म होने वाली) तथा तीव्र ध्येयनिष्ठा हमारे हृदय में सदैव जाग्रत रहे। आपके आशीर्वाद से हमारी विजयशालिनी संगठित कार्यशक्ति स्वधर्म का रक्षण कर, अपने इस राष्ट्र को परम वैभव की स्थिति पर ले जाने में पूर्णतः समर्थ होवें।

।। भारत माता की जय ।।

राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ का बीजारोपण

श्री विजयादशमी, 27 सितम्बर 1925